04 - अरावली पर्वत : भविष्य की आखिरी दीवार

05 - श्याम बाबू सिनेमा में संविधान के मूल्य जिन्दा रखते थे

A Daily News Magazine

इंदौर

बुधवार, 24 दिसंबर, 2025

06 - पीपीपी मॉडल से देश का पहला मेडिकल कॉलेज धार में

07 - केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने किया 73 करोड़ रूपये से अधिक के...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 88, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

पंजाब में अब गैंगस्टरों और आतंकियों का खतरनाक गठजोड़

कृष्ण मुरारी

कनाडा के सरे शहर में कॉमेडियन कपिल शर्मा के 'कैप्स कैफे' की आलीशान और शांत फिज़ा अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट से दहल गई। किसी की जान नहीं गई, लेकिन एक संदेश ज़रूर देने की कोशिश की गई। टूटे शीशों के पीछे जो साझा कड़ी दिखती है, वह है पंजाब के गैंग वॉर का लगातार फैलता और उलझता जाल। जो शुरुआत में पंजाब में कॉलेजों की आपसी रंजिश और स्थानीय इलाकों की लड़ाई के रूप में शुरू हुआ था, वह पहले संगीत, मनोरंजन और कबड्डी जैसे खेलों में घुसा। अब यह एक ग्लोबल नेटवर्क में बदल चुका है, जिसे एक नई तिकड़ी चला रही है- अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क, ट्रक और आतंकवाद।

गैंग लीडर अमेरिका और कनाडा में सुरक्षित ठिकानों से धमकियां देते हैं, जबकि पुरानी दुश्मनियां फेस्नो के ट्रक यार्ड, सरे के कैफे और लिस्बन के सबअर्ब तक भड़क रही हैं। उत्तरी अमेरिका में ट्रकिंग इंडस्ट्री इसकी लॉजिस्टिक रीढ़ बन गई है, जहां कैलिफोर्निया और टेक्सास में पंजाबी-बहुल नेटवर्क का इस्तेमाल कथित तौर पर ड्रग्स, फेंटानिल के कच्चे माल और हथियारों की तस्करी में किया जा रहा है और अपराध और आतंक के बीच की रेखा धुंधली हो रही है। पुलिस का कहना है कि कुछ गैंगस्टर अब पाकिस्तान में बैठे ISI हैंडलरों से हिट लिस्ट और ग्रेनेड चलाने की ट्रेनिंग ले रहे हैं, जबकि कुछ बब्बर खालसा जैसे संगठनों के लिए काम कर रहे हैं।

चंडीगढ़ में अपने दफ्तर में पंजाब एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स (AGTF) के डीआईजी गुरमीत सिंह चौहान जिन्हें पंजाब का 'गैंगबस्टर' कहा जाता है, उन्होंने 2022 में सिद्धू मूसेवाला की सरेआम हत्या को टर्निंग पॉइंट बताया। इस हत्या ने विदेशी ठिकानों से संचालित बिखरे हुए नेटवर्क का खुलासा किया और पंजाब को आपराधिक हिंसा के एक नए, खतरनाक दौर में धकेल दिया। गैंगस्टर भारत के बाहर बैठकर काम करने लगे और भारत की कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए उन्हें ट्रैक करना एक बड़ी चुनौती बन गया। इस हत्या ने साबित कर दिया कि पंजाब का अपराध अब राष्ट्रीय सीमाओं में बंधा नहीं रहा। साथ ही, इसने गैंगस्टर संस्कृति के ग्लैमर को और बढ़ावा दिया। 2014 से जेल में बंद होने के बावजूद बिश्नोई घर-घर में जाना-पहचाना नाम बन गया; उसकी तस्वीरें टी-शर्ट्स पर छपने लगीं और उसके स्टाइल से 'लॉरेंस बिश्नोई जैकेट' का ट्रेंड शुरू हो गया।

'गैंग संकट से निपटने के लिए पंजाब ने 2022 में GTF का गठन किया, लेकिन समस्या अब सिर्फ अपराध तक सीमित नहीं रही। पंजाब में गैंगस्टर कल्चर बढ़ रहा है, लेकिन सबसे नई और सबसे बड़ी चुनौती है गैंग्स और आतंकवाद का मेल।'

10 जुलाई को कैप्स कैफे पर हमले के बाद जर्मनी में बैठे गैंगस्टर हरजीत सिंह लड्डी, जो बब्बर खालसा इंटरनेशनल से जुड़ा है, उसने इसकी जिम्मेदारी ली और आरोप लगाया कि शर्मा ने निहंग सिखों का मज़ाक उड़ाया था, लेकिन 7 अगस्त को जब फिर से गोलियां चलीं, तो लॉरेंस बिश्नोई के सहयोगी गोल्डी ढिल्लो से जुड़ा एक पोस्ट सामने आया, जिसमें हमले की जिम्मेदारी लेते हुए मुंबई में 'अगले ऑपरेशन' की चेतावनी दी गई। पिछले महीने दिल्ली पुलिस ने इन हमलों के समन्वय में भूमिका के लिए बंधु मान सिंह सेखों को गिरफ्तार किया। सेखों, जो भारत और कनाडा के बीच समय बिताता है, उसके ISI से जुड़े गैंगस्टर और हथियार तस्कर हैरी चाठा के साथ-साथ गोल्डी ढिल्लो से भी करीबी संबंध बताए जाते हैं। पुलिस के अनुसार, सेखों ने बताया कि अगर शर्मा ने फिरौती की मांग नहीं मानी होती, तो योजना उन्हें मारने की थी।

भारतीय और कनाडाई एजेंसियां अब बिश्नोई नेटवर्क से जुड़े दो कथित शूटरों की तलाश में हैं। यह गैंगस्टरवाद का एक नया, हाइब्रिड रूप है, जहां सीमाएं, निष्ठाएं और मकसद पहले से कहीं ज्यादा बदलते और धुंधले हैं। इसी बीच, कथित आतंकी संबंधों के बावजूद, ये डॉन खुद को नैतिक रूप से ऊंचा बताते हैं। कभी सहयोगी रहे और अब दुश्मन बने लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़, दोनों खुद को 'राष्ट्रवादी' बताते हैं। 25 नवंबर की शाम, जब मुख्यमंत्री भगवंत मान के अगले दिन गुरदासपुर दौरे पर जाने का कार्यक्रम था, शहर के पुलिस थाने के बाहर अफरा-तफरी मच गई। चश्मदीदों ने बताया कि एक जलती हुई चीज़ ज़मीन पर गिरी और जोरदार धमाका हुआ। धातु के छर्रों से कम से कम चार लोग घायल हो गए। पुलिस ने शुरुआत में इस ग्रेनेड हमले के लिए 'अराजक तत्वों' को जिम्मेदार ठहराया, लेकिन जांच एक ऐसे जाल में जा पहुंची, जिसमें ISI, पाकिस्तानी गैंगस्टर शहजाद भट्टी और यहां तक कि हर जगह मौजूद लॉरेंस बिश्नोई का नाम भी सामने आया। इसके पीछे आतंक की एक ऐसी साजिश थी, जिसमें गैंगस्टर बनने के ग्लैमर भरे सपनों का इस्तेमाल किया गया। अब हो चुके अकाउंट्स से भट्टी ने कथित तौर पर महंगी गाड़ियों, बंदूकों की तस्वीरें और मासूम शर्मा के गाने 'ट्यूशन बदमाशी का' जैसे गीतों पर बने रील्स पोस्ट किए। भर्ती किए गए लोग, जिनमें ज्यादातर बिना किसी आपराधिक रिकॉर्ड के युवा थे।

'नवंबर के पहले तीन हफ्तों में ही पंजाब पुलिस ने गैंग-आतंक के सात मॉड्यूल तोड़े, जहां कुछ भर्तियों को पाकिस्तान और कनाडा में बैठे उनके हैंडलरों ने कथित तौर पर 'टारगेट किलिंग' सौंपी, वहीं कुछ को ISI ने यूट्यूब वीडियो के जरिए दूर से ही हैंड ग्रेनेड चलाने और उन्हें फोड़ने की 'ट्रेनिंग' दी। पुलिस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद ऐसे मामलों में तेज़ी देखी गई है। 2015 से ISI राज्य में अराजकता फैलाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने राज्य में RSS नेताओं और सिख नेताओं की टारगेट किलिंग शुरू की थी। विदेशी हैंडलर टारगेट किलिंग के लिए गैंगस्टरों का इस्तेमाल करते हैं।'

चौहान ने कहा, 'यह पंजाब में एक नया ट्रेंड है, जहां आतंकी संगठन गैंग्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। हैंडलर बड़ी संख्या में शरण मांगने वालों को भर्ती करते हैं और अक्सर उन्हें विदेशों में ट्रकिंग कारोबार में ड्राइवर के रूप में लगा देते हैं। कई ट्रकर्स पकड़े जा चुके हैं। इन नेटवर्क्स को मुनाफा और ताकत चलाते हैं, लेकिन जब ज़रूरत होती है, तो विचारधारा का भी इस्तेमाल किया जाता है। अलगाववाद भी कुछ ऐसा ही लचीला और बदलता समीकरण है। एक गैंग अपने भीतर अलगाववाद समर्थक और अलगाववाद विरोधी- दोनों तरह के लोग रख सकता है। गैंगस्टरों के लिए यह सिर्फ समुदाय के बीच कुछ वैधता और प्रभाव हासिल करने का जरिया है।' ऐसे मामलों में पुलिस के हाथ अक्सर बंधे रहते हैं। फिरौती की धमकियां और फायरिंग की घटनाएं राज्य में कानून-व्यवस्था की बड़ी समस्या बनी हुई हैं और डर का माहौल कायम है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

मछलियों को लगता था
के जैसे वे तड़पती हैं पानी के लिए
पानी भी उनके लिए
वैसा ही तड़पता होगा।
लेकिन जब खींचा जाता है जाल
तो पानी मछलियों को छोड़कर
जाल के छेदों से निकल भागता है।
पानी मछलियों का देश है
लेकिन मछलियां अपने देश के बारे में
कुछ नहीं जानतीं।

- नरेश सक्सेना

● बांग्लादेशी हिंदू युवक की हत्या का भारत में विरोध

विश्व हिंदू परिषद का 6 राज्यों में प्रदर्शन

● कोलकाता में पुलिस से झड़प, ढाका में भारतीय उच्चायुक्त तलब

नई दिल्ली/कोलकाता/ढाका (एजेंसी)। विहिप के कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को नई दिल्ली में बांग्लादेश में हिंदू युवक की हत्या के खिलाफ विश्व हिंदू परिषद देशभर में प्रदर्शन कर रही है। मंगलवार की सुबह वीएचपी के कार्यकर्ताओं ने दिल्ली में बांग्लादेश हाई कमीशन के बाहर प्रदर्शन किया।

दिल्ली के अलावा वीएचपी ने मुंबई, कोलकाता, अहमदाबाद, भोपाल और जम्मू में रैली निकालकर पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने की मांग की।

बांग्लादेश में 18 दिसंबर की रात हिंदू युवक दीपू चंद्र की हत्या कर दी गई थी। पहले यह दावा किया जा रहा था कि दीपू ने फेसबुक पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली टिप्पणी की थी, लेकिन शुरुआती जांच में इसका कोई सबूत नहीं मिला।

बोले इमरान मसूद 'प्रियंका को पीएम बनाओ और देखो...'

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने प्रियंका गांधी वाड्रा को प्रधानमंत्री का चेहरा बनाने की मांग की थी, इसका उनके पति रॉबर्ट वाड्रा ने भी समर्थन कर दिया है। रॉबर्ट का दावा है कि यह मांग हर जगह से हो रही है कि प्रियंका अब आगे आएं। बता दें कि हाल में संपन्न हुए संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान जब से लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी विदेश दौरे पर गए, सियासी गलियारों में प्रियंका को लेकर सुगबुगाहट तेज हो गई। अब रॉबर्ट वाड्रा ने जिस तरह से सार्वजनिक तौर पर पत्नी को आगे आकर एक तरह से कांग्रेस की कमान संभालने का आह्वान किया है, उससे पार्टी के अंदर चल रही कशमकश की अटकलों पर भी मुहर लग गई है।

दिग्विजय सिंह बोले- हमारे देश में अल्पसंख्यक के खिलाफ जिस तरह कार्रवाई होती है, उसी का वहां दिख रहा रिएक्शन

कांग्रेस से राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने बांग्लादेश में हिंदू और ईसाई समुदाय के साथ हो रही हिंसा पर विवादित बयान दिया है। दिग्विजय ने कहा- बांग्लादेश में जो हालात बन रहे हैं, उसके पीछे वही कट्टरपंथी और धर्मांध ताकतें हैं, जो धर्म के नाम पर राजनीति करती हैं। उन्होंने कहा- हमारे देश में जिस तरह अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ कार्रवाई होती है, उसी का रिएक्शन बांग्लादेश में देखने को मिल रहा है। वहां हमारे हिंदू भाइयों और ईसाई समुदाय के साथ जो हो रहा है, उसकी हम घोर निंदा करते हैं।

धार में पीपीपी मोड पर आकार लेगा देश का पहला मेडिकल कॉलेज : मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवाचारी सोच के साथ देश का नेतृत्व कर रहा है : केन्द्रीय मंत्री नड्डा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में मध्यप्रदेश मंगलवार को एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल कर रहा है। प्रदेश के दो जनजातीय बाहुल्य जिलों में आज मेडिकल कॉलेजों का भूमि पूजन हो रहा है। प्रदेश के अंतिम पंक्ति में बैठे अंतिम व्यक्ति तक सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने सहभागिता के साथ देश में पीपीपी मोड के आधार पर पहला मेडिकल कॉलेज शुरू किया जा रहा है। मध्यप्रदेश ने इस मामले में देश का नेतृत्व किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश की स्वास्थ्य व्यवस्था में बड़ा बदलाव आया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पीपीपी मॉडल में समाज और सरकार मिलकर स्वास्थ्य सेवाओं का

सुदृढ़ीकरण कर, हर व्यक्ति तक बेहतर इलाज पहुंचाने की दिशा में कार्य करेंगे। सेवा और विकास हमारी सरकार का मूल मंत्र है, विगत दो वर्ष जनकल्याण और विकास की दृष्टि से अद्वितीय रहे हैं। मध्यप्रदेश देश का एकमात्र राज्य है, जिसके दो बड़े शहरों- भोपाल और इंदौर में सालभर के अंदर मेट्रो ट्रेन का शुभारंभ हुआ। इसके साथ ही प्रदेश में हवाई सेवाओं का भी विस्तार हो रहा है। अब रीवा से इंदौर और नई दिल्ली के लिए हवाई सेवा उपलब्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव धार में पीपीपी मॉडल पर मेडिकल कॉलेज के शिलान्यास के लिए पीजी कॉलेज मैदान धार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, रसायन और उर्वरक मंत्री श्री जे.पी. नड्डा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। **(शेष पेज-6 पर)**

के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगतप्रकाश नड्डा का प्रदेशवासियों की ओर से विशेष आभार है। यह पीपीपी मोड (जन-निजी भागीदारी) पर बनने वाला देश का पहला मेडिकल कॉलेज होगा। इस पहल की शुरुआत मध्यप्रदेश की धरती से हो रही है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मंगलवार को धार में चिकित्सा महाविद्यालय के शिलान्यास समारोह के दौरान लाड़ली लक्ष्मी बिटिया को दुलार भी किया।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि धार में मेडिकल कॉलेज का भूमि-पूजन देश के लिए ऐतिहासिक अवसर है। मध्यप्रदेश ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में देश को एक नेतृत्व दिया है। राज्य में नवाचारी सोच और जन

पटना में नितिन नबीन बोले- बिहार ने राहुल को ऐसे भगाया कि जर्मनी चले गए

पटना (एजेंसी)। बीजेपी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बनने के बाद बांकीपुर विधायक नितिन नबीन पहली बार पटना आए हैं। पटना में 6 किमी के लंबे रोड शो के बाद उन्होंने मिलर हाई स्कूल के ग्राउंड में पहुंचे। यहां उनके स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नितिन नबीन कहा, राहुल गांधी की तरह पार्ट टाइम पॉलिटिक्स नहीं करना है। बिहार की जनता ने राहुल को ऐसे भगाया कि जर्मनी में बस गए। जर्मनी की जमीन पर जाकर वे देश

को गाली दे रहे हैं। देश में रहकर देश को गाली देते हैं। ऐसे लोगों को चोट देने का समय आ गया है। बिहार में भी एक पार्ट टाइम पॉलिटिशियन है। चुनाव हारते हैं तो विदेश घूमने चले जाते हैं। उन्होंने कहा, बिहार के बाद बंगाल और केरल भी जीतेंगे। एयरपोर्ट इलाके में 1.5 किमी ज्यादा लंबा जाम लग गया है। रोड शो के दौरान विजय सिन्हा नितिन नबीन के बगल में खड़े थे, तभी सम्राट चौधरी ने उन्हें साइड होने को कहा और खुद राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष के बगल में खड़े हो गए।

कर्नाटक से अयोध्या पहुंची रत्नजड़ित श्रीराम की प्रतिमा

● सोना-चांदी और हीरा लगा हुआ है, अनुमानित कीमत 25 से 30 करोड़ ● गुमनाम भक्त ने भेजी, अभी पता नहीं चला : ट्रस्ट सदस्य डॉ. अनिल मिश्र

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में सोमवार शाम को कर्नाटक से प्रभु श्रीराम की रत्नजड़ित प्रतिमा पहुंची। प्रतिमा 10 फिट ऊंची और 8 फिट चौड़ी है। इसमें सोना, चांदी और हीरा लगा हुआ है। इसका निर्माण दक्षिण भारत की शिल्पकला से किया गया है।

राम जन्मभूमि से जुड़े ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्र ने बताया कि ये प्रतिमा किसने भेजी है। अभी इसका पता नहीं चल पाया है। इसका वजन कराया जा रहा है। डिटेल मिलते ही जानकारी शेयर की जाएगी।

इस प्रतिमा को संत तुलसीदास मंदिर के पास अंगद टीला पर स्थापित किए जाने पर विचार किया जा रहा है। इसकी स्थापना से पहले इसका अनावरण किया जाएगा। अनावरण के बाद प्राण-प्रतिष्ठा समारोह होगा। जिसमें देशभर के संतों और महंतों को बुलाया जाएगा।

प्रतिमा का वजन लगभग पांच क्विंटल

राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़े सूत्रों के अनुसार, अयोध्या में कर्नाटक से लाई गई भगवान श्रीराम की भव्य प्रतिमा सोने, हीरे और बहुमूल्य रत्नों से निर्मित की गई है। इस प्रतिमा का वजन लगभग पांच कुंतल बताया जा रहा है। भेजने वाले का नाम अभी सामने नहीं आया है। अनुमान लगाया जा रहा है कि इसकी कीमत 25 से 30 करोड़ रुपए हो सकती है।

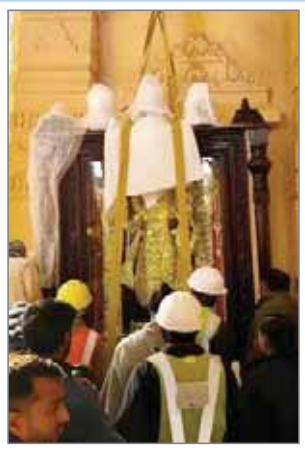

स्पेशल वैन से 6 दिन में आई है

कर्नाटक से अयोध्या तक 1750 किमी का सफर पूरा किया। स्पेशल वैन से लाई गई। 5 से 6 दिन लगे। मंगलवार की शाम को 3:30 बजे पहुंची। परिसर में ही इसे खोला गया है। सूत्रों के मुताबिक, इस प्रतिमा को कर्नाटक के कुछ श्रद्धालुओं ने संयुक्त रूप से तैयार कराया है। निर्माण कार्य में तंजावुर के कुशल और अनुभवी कारीगरों की अहम भूमिका रही है, जिन्होंने इसे अत्यंत कलात्मक और आकर्षक स्वरूप प्रदान किया है। प्रतिमा रत्न और स्वर्ण जड़ित है। धातु का पता नहीं चल सका है। बताया जा रहा है कि यह प्रतिमा राम जन्मभूमि में प्रतिष्ठापित रामलला की नवनिर्मित मूर्ति की हूबहू प्रतिकृति है। इसमें सोने के साथ ही हीरा, पन्ना, नीलम जैसे बहुमूल्य पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

अंगद टीला पर किया गया भूमि पूजन

प्रतिष्ठा द्वादशी कार्यक्रम स्थल अंगद टीला परिसर में श्री राम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र के महासचिव चंपत राय ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भूमि पूजन किया। इसी के बाद यहां समन्न होने वाले धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये पंडाल, मंच और साज-सज्जा का कार्य शुरू हो गया है। भूमि पूजन अनुष्ठान में मुख्य यजमान के साथ ट्रस्टी डॉ अनिल मिश्र, आयोजन की केंद्रीय समिति के सदस्य नरेन्द्र, डॉ चन्द्र गोपाल पाण्डेय, धनन्जय पाठक व हेमेंद्र मौजूद रहे। अंगद टीला परिसर में प्रतिष्ठा द्वादशी के सभी धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम 29 दिसंबर 2025 से 2 जनवरी 2026 तक चलेंगे।

6 दरवाजों पर 18 किलो सोना लगाया गया

इससे पहले 5 मई को राम मंदिर के फर्स्ट फ्लोर के 6 दरवाजों पर 18द्यद सोना लगाया गया था। हर दरवाजे पर 3 किलो सोना लगाया जाएगा। मुख्य कलश और राम दरबार के सिंहासन पर भी सोना लगाया जाएगा। इस पर 3 से 4द्यद सोना मढ़ा जाएगा। करीब दो साल पहले राम मंदिर के ग्राउंड फ्लोर के 14 दरवाजों पर सोना लगाया गया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 27 °c | न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 24 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पाकिस्तान-चीन को बड़ा झटका

फ्रांस ने भारत को सौंप दिए तबाही मचाने वाले दो सिस्टम

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस एक बार फिर भारत के लिए बड़ा दोस्त साबित हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मेक-इन-इंडिया' कार्यक्रम के तहत एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मिनी नवरत्न रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम इंडिया ऑप्टेल लिमिटेड (आईएएल) ने फ्रांसीसी कंपनी सैफरान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड डिफेंस के साथ दो हाई परिशुद्धता वाले युद्ध में सिद्ध हो चुके सिस्टमों के प्रोडॅक्शन ट्रांसफर के लिए एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे इन सिस्टमों को अब देश में ही बनाया जा सकेगा। 36 राफेल के करार के बाद फ्रांसीसी कंपनी ने भारत से एक और बड़ा करार किया है।

● **क्या हैं वे सिस्टम, जिन पर फ्रांसीसी कंपनी से हुआ करार-** रक्षा मंत्रालय के अनुसार, इस समझौते के तहत सटीक हमले करने में सक्षम दो अहम युद्धक प्रणालियों को विकसित किया जाएगा। पहला सिस्टम्स हैं-सिग्मा 30एन डिजिटल रिंग लेजर जाइरो इनर्टियल नेविगेशन सिस्टम। इसका इस्तेमाल तोपों, एयर डिफेंस सिस्टम, मिसाइलों और रडारों में किया जाता है। वहीं, दूसरा सिस्टम सीएम3-एमआर डायरेक्ट फायरिंग साइट है, जिसे तोपों और ड्रोन-रोधी प्रणालियों के लिए डिजाइन किया गया है।

किस तरह से इन दो सिस्टमों का होगा फायदा

सिग्मा 30एन एक डिजिटल इनर्टियल नेविगेशन और पोजिशनिंग सिस्टम है जो तोपखाने, मिसाइल प्लेटफॉर्म, रडार और वायु रक्षा प्रणालियों के लिए सटीक नेविगेशन प्रदान करता है।

सीएम3-एमआर एक डायरेक्ट फायरिंग साइट सिस्टम है जिसका उपयोग तोपखाने और ड्रोन-रोधी प्लेटफॉर्म पर किया जाता है। यह सटीक लाइन-ऑफ-साइट लक्ष्यीकरण को सक्षम बनाता है, जिससे पारंपरिक और असममित युद्ध परिदृश्यों में दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार होता है।

राहुल ने जर्मनी में कहा

भाजपा संविधान खत्म करने की साजिश रच रही

बर्लिन (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बीजेपी पर भारतीय संविधान को खत्म करने की साजिश रचने का आरोप लगाया है। राहुल ने कहा- बीजेपी संविधान की उस मूल भावना को खत्म करना चाहती है, जो सभी नागरिकों को समान अधिकार देती है। बीजेपी राज्यों की समानता, भाषाओं की समानता और धर्मों की समानता के विचार को खत्म करने की बात कर रही है। बीजेपी ने देश की संस्थाओं पर भी पूरा कब्जा कर लिया है।

दिल्ली कैबिनेट की बैठक में लिया गया अहम फैसला

दिल्ली में चलेंगी सिर्फ डीटीसी की बसें, नो पीयूसी-नो फ्यूल...

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए कैबिनेट बैठक में महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं, जिसमें दिल्ली में बसों का परिचालन पूरी तरह दिल्ली ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन (डीटीसी) के तहत करने का निर्णय शामिल है, जिससे क्लस्टर या डीआईएमटीएस जैसी निजी व्यवस्थाओं को समाप्त कर 100 प्रतिशत डीटीसी संचालन सुनिश्चित किया जाएगा। यह फैसला सार्वजनिक परिवहन को मजबूत बनाने और प्रदूषण कम करने की दिशा में उठाया गया कदम है।

इसके साथ ही डीटीसी बस रूटों को युक्तिसंगत बनाने पर भी जोर दिया गया। इसके अलावा, जीआरएपी-4 प्रतिबंध हटने के बाद भी 'नो पीयूसी, नो फ्यूल' नियम को स्थायी रूप से लागू रखने का निर्णय लिया गया, ताकि बिना वैध प्रदूषण प्रमाणपत्र वाले वाहनों को ईंधन न दिया जाए और दिल्ली की हवा को स्वच्छ बनाए रखने में मदद मिले।

इसरो के ब्लूबर्ड-2 सैटेलाइट लॉन्चिंग की उल्टी गिनती शुरू

● तिरुमला मंदिर पहुंचे इसरो चीफ वी नारायणन, आज लॉन्चिंग

नईदिल्ली (एजेंसी)। इसरो नई जेनरेशन के कम्युनिकेशन सैटेलाइट ब्लूबर्ड 2 को ले जाने वाले एलवीएम-एम6 रॉकेट के प्रक्षेपण के लिए 24 घंटे की उल्टी गिनती मंगलवार को यहां शुरू हो चुकी है। इसरो के इस महत्वपूर्ण लॉन्चिंग से पहले इसरो अध्यक्ष वी. नारायणन ने 23 दिसंबर को तिरुमला स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की। उन्होंने मिशन की सफलता की कामना की। इस मौके पर उन्होंने

2 की लॉन्चिंग के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस सैटेलाइट को इसरो के बाहुबलि एलवीएम-एम6 रॉकेट से लॉन्च किया जाएगा। लॉन्चिंग से पहले इसरो चीफ ने तिरुमला मंदिर जाकर मिशन की सफलता के लिए पूजा की।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कहा कि अमेरिका के एक नए पीढ़ी के संचार उपग्रह ब्लूबर्ड मिशन को लेकर अहम जानकारी और टाइमलाइन के बारे में भी बताया। इसरो के चेयरमैन वी. नारायणन ने कहा कि 24 दिसंबर की सुबह, हम अपने बाहुबली रॉकेट एलवीएम-3 रॉकेट का इस्तेमाल करके ब्लू बर्ड 2 सैटेलाइट लॉन्च करने का टारगेट बना रहे हैं। एलवीएम-3 एम 6 रॉकेट इस सैटेलाइट को लॉन्च करेगा।

'रात में मेरे घर छोड़ दो, मैं सारा कर्जा माफ कर दूंगा' गुना में सूदखोर ने कर्ज के बदले मांगी पत्नी

गुना (नप्र)। मध्य प्रदेश के गुना जिले से रूह कंपा देने वाली घटना सामने आई है, जिसने न केवल कानून व्यवस्था बल्कि मानवीय संवेदनाओं पर भी गहरा प्रहार किया है। मधुसूदनगढ़ तहसील के ग्राम परवरिया निवासी एक दलित परिवार मंगलवार को कलेक्ट्रेट की जनसुनवाई में न्याय की गुहार लगाने पहुंचा। पीड़ित रामस्वरूप वाल्मीकि और उसकी पत्नी रसीता बाई ने गांव के ही एक रसूखदार व्यक्ति पर जो आरोप लगाए हैं, उन्हें सुनकर जनसुनवाई में मौजूद अधिकारियों के भी होश उड़ गए।

कर्ज चुकाने के बाद भी अवैध वसूली का खेल- पीड़ित रामस्वरूप ने गुना कलेक्टर को दिए शिकायती आवेदन में बताया कि उसने गांव के ही राकेश कलावत से कुछ पैसे उधार लिए थे। रामस्वरूप का दावा है कि उसने पाई-पाई कर उधार की पूरी राशि ब्याज सहित चुका दी है। लेकिन इसके बावजूद आरोपी राकेश की भूख शांत नहीं हुई। वह लगातार पीड़ित पर और पैसों का दबाव बना रहा है। हद तो तब हो गई जब आरोपी ने

सरेराह पीड़ित को रोककर उसकी मोटरसाइकिल छीन ली और कहा कि जब तक और पैसे नहीं दोगे, गाड़ी वापस नहीं मिलेगी।

थाने में नहीं हुई सुनवाई, अब प्रशासन से आस- बेहद गरीब तबके से आने वाला यह परिवार पिछले कई दिनों से दहशत के साये में जी रहा है। पीड़ित का कहना है कि उसने स्थानीय पुलिस थाने में भी गुहार लगाई थी, लेकिन वहां उसकी एक न सुनी गई। रसूख के आगे पुलिस की खामोशी ने आरोपी के हौसले और बुलंद कर दिए। थक-हारकर यह परिवार मंगलवार को गुना जिला मुख्यालय पहुंचा और अपनी व्यथा सुनाई।

मर्यादा लांघी, शर्मसार कर देने वाली शर्त

शिकायत में सबसे चौंकाने वाला और शर्मनाक पहलू आरोपी की घिनौनी मांग है। पीड़ित दंपति ने आरोप लगाया कि जब उन्होंने और पैसे देने में असमर्थता जताई तो आरोपी राकेश कलावत ने मर्यादा की सारी सीमाएं लांघ दीं। उसने पीड़ित रामस्वरूप से कहा कि पैसे नहीं दे सकते तो अपनी पत्नी को रात के लिए मेरे घर छोड़ दो, मैं तेरा सारा कर्जा माफ कर दूंगा। जब फरियादी ने विरोध किया तो आरोपी ने पूरे परिवार को जान से मारने और गांव में रहने न देने की धमकी दी है।

चीनी वीजा घोटाला मामले में कार्ति चिदंबरम की मुश्किलें बढ़ीं

नईदिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की अदालत ने चीनी वीजा घोटाले से जुड़े सीबीआई मामले में कांग्रेस सांसद कार्ति पी चिदंबरम और अन्य के खिलाफ आरोप तय करने का आदेश दिया है। यह मामला 2011 से जुड़ा है जब कार्ति के पिता पी. चिदम्बरम गृह मंत्रालय के मंत्री थे। पंजाब के तालवंडी साबो पावर लिमिटेड नाम की कंपनी की वॉर्डर के तहत 2011 में एक पावर प्रोजेक्ट चल रहा था, जिसमें चीनी कर्मचारी काम कर रहे थे। इन लोगों के लिये स्पेशल प्रोजेक्ट वीजा जारी किये गए थे। कार्ति चिदंबरम पर आरोप है कि उन्होंने चीनी नागरिकों को भारत में काम करने के लिए वीजा दिलाने में अवैध तरीके से सहायता करने के एवज में रिश्वत ली और इससे जुड़े नियमों में अनियमितता कराई।

जेपी नड्डा और सीएम यादव पहुंचे महाकाल की शरण में

भगवान का अभिषेक किया, अन्न क्षेत्र से प्रसादी ग्रहण की, खुद ही थाली रखकर आए

उज्जैन (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा सीएम डॉ. मोहन यादव सोमवार रात उज्जैन पहुंचे। रात में जेपी नड्डा ने भगवान महाकाल के दर्शन किए और शयन आरती में शामिल हुए। इसके बाद मंगलवार सुबह सीएम डॉ. मोहन यादव के साथ मिलकर नंदी हाल में 20 मिनट तक पूजन किया और गर्भगृह में भी भगवान का पूजन-अर्चन किया। गर्भगृह में दोनों ने महाकाल का अभिषेक किया और पुजारी आकाश ने 20 मिनट तक षोडशोपचार पूजन कराया।

बिहार में नालंदा यूनिवर्सिटी के मुरीद हुए शशि थरूर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने बिहार में नालंदा यूनिवर्सिटी की फिर से स्थापना और देश में कई अन्य योगदानों के लिए मंगलवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर और उनके विदेश मंत्रालय की सराहना की। पूर्व केंद्रीय मंत्री बिहार में आयोजित नालंदा लिटरेचर फेस्टिवल में हिस्सा लेने पहुंचे थे। थरूर राज्य में नालंदा यूनिवर्सिटी के कैंपस से प्रभावित नजर आए। उन्होंने इसके लिए विदेश मंत्री जयशंकर को बधाई भी दी। थरूर ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि मैं नालंदा साहित्य महोत्सव में भाग लेने के दौरान नालंदा यूनिवर्सिटी कैंपस से बेहद प्रभावित हुआ।

यूपी में पिज्जा-बर्गर खाने से 11वीं की छात्रा की मौत

● एम्स के डॉक्टर बोले-आंतें खराब हो गईं, ऑपरेशन के बाद भी बच नहीं पाई

अमरोहा (एजेंसी)। अमरोहा में 11वीं की छात्रा की फास्टफूड खाने की वजह से मौत हो गई। दिल्ली एम्स में उसका इलाज चल रहा था। डॉक्टर ने बताया कि ज्यादा फास्टफूड खाने की वजह से लड़की की आंतें आपस में चिपक गई थीं। पाचन तंत्र पूरी तरह से डैमेज हो गया था।

उसका ऑपरेशन भी किया गया, लेकिन बच नहीं पाई। घरवालों का कहना है कि अहाना बचपन से ही घर के खाने की जगह चाऊमीन, पिज्जा और बर्गर ही खाती थी। वही उसके मौत की वजह बन गई। मामला अफगानान मोहल्ले का है। जो किसी भी बच्चे या नौजवानों के साथ हो सकता है।

एसआईआर वोटर लिस्ट- मप्र में 42.74 लाख नाम कटे

ईपिक नंबर से नाम सर्च नहीं हो रहा, केरल-छत्तीसगढ़ की लिस्ट भी जल्द

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने मंगलवार को मध्य प्रदेश में एसआईआर की ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी की है। इसके मुताबिक राज्य की वोटर लिस्ट में से 42.74 लाख नाम हटाए गए हैं। इनमें 19.19 लाख पुरुष और 23.64 लाख महिलाएं हैं। इसके अलावा 8.40 लाख नाम ऐसे हैं, जिनकी मैपिंग नहीं हुई है।

ड्राफ्ट जारी होते ही वेबसाइट पर दिक्कत देखने मिली। वेबसाइट खुलते ही ईपिक नंबर डालने पर कैप्चा आ रहा है, लेकिन उसे सब्मिट करने पर डिटेल नहीं मिल रही, फिर से कैप्चा आ रहा है। मोबाइल नंबर डालने पर ही वोटर डिटेल खुल रही है।

ईसी आज केरल, छत्तीसगढ़ और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की ड्राफ्ट लिस्ट भी पब्लिश करेगा। छत्तीसगढ़ में भी आंकड़ा लाखों में हो सकता है। इससे पहले चुनाव आयोग 7 राज्यों पश्चिम बंगाल, राजस्थान, तमिलनाडु, गुजरात, गोवा, लक्षद्वीप और पुडुचेरी की ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी कर चुकी है।

इन राज्यों में अलग-अलग कारणों से कुल 2 करोड़ 70 लाख से ज्यादा नाम ड्राफ्ट रोल से हटाए गए हैं। इनमें सबसे ज्यादा 97 लाख तमिलनाडु से फिर गुजरात से 73 लाख और बंगाल से 58 लाख नाम ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में से बाहर किए गए हैं।

केंद्रीय मंत्री शिवराज बोले-

जी रामजी से कांग्रेस परेशान, किसानों की शान कभी जाने नहीं दूंगा

मेड़ता (नागौर) (एजेंसी)। राजस्थान के नागौर में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा- कांग्रेस जी रामजी से परेशान है। पगड़ी का मान, आपका सम्मान और किसानों की शान कभी जाने नहीं दूंगा। उन्होंने कहा- केंद्र सरकार किसानों के लिए बीज का कानून, पेस्टीसाइड एक्ट ला रही है। इससे नकली बीज बेचने वालों पर नकेल लगेगी।

मंत्री किरोड़ी लाल मीणा को लेकर शिवराज सिंह चौहान ने कहा- हम मामा,वो बाबा, लेकिन वो कह रहे थे कि हमें जल्दी जाना है। हम एक बार आते हैं तो जिंदगी भर छोड़कर नहीं जाते हैं।शिवराज सिंह मेड़ता में किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में किसानों को 3200 करोड़ से ज्यादा की सौगात दी गई।

ज्ञानपीठ से सम्मानित साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का निधन

पीएम मोदी ने श्री शुक्ल के निधन पर दुख जताया है

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के मशहूर कवि, कथाकार और उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल का 88 साल की उम्र में मंगलवार शाम को निधन हो गया है। एक महीने पहले ही उन्हें भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया था। शुक्ल पिछले कुछ महीनों से बीमार चल रहे थे। उनका एम्स रायपुर में इलाज चल रहा था। रायपुर के मारवाड़ी मुक्तिधाम में आज सुबह 11 बजे अंतिम संस्कार होगा।

साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को ज्ञानपीठ के महाप्रबंधक आरएन तिवारी ने वाग्देवी की प्रतिमा और पुरस्कार का चेक सौंपकर उन्हें सम्मानित किया था। ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने

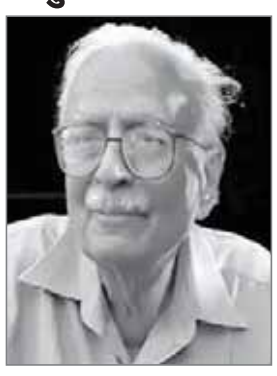

वाले वे छत्तीसगढ़ के पहले साहित्यकार हैं। इस दौरान विनोद कुमार शुक्ल ने कहा था- जब हिन्दी भाषा सहित तमाम भाषाओं पर संकट की बात कही जा रही है, मुझे पूरी उम्मीद है कि नई पीढ़ी हर भाषा और हर विचारधारा का सम्मान करेगी। किसी भाषा या अच्छे विचार का नष्ट होना, मनुष्यता का नष्ट होना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विनोद कुमार शुक्ल से उनका हाल-चाल जाना था। पीएम छत्तीसगढ़ के 25वें स्थापना दिवस पर रायपुर आए थे। इस दौरान विनोद कुमार शुक्ल ने प्रधानमंत्री से कहा था कि, लिखना मेरे लिए सांस लेने जैसा है। मैं जल्द से जल्द घर लौटना चाहता हूं - मैं लिखना जारी रखना चाहता हूं।

पीएम मोदी ने विनोद कुमार शुक्ल के निधन पर दुख जताया है। उन्होंने एक्स पर लिखा- ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात लेखक विनोद कुमार शुक्ल जी के निधन से अत्यंत दुख हुआ है।

'एमजीएम' के जूनियरों की शिकायत फर्जी निकली, सभी आरोप निराधार

इंदौर। एमजीएम कॉलेज में दो दिन पहले जूनियर छात्र द्वारा सीनियर छात्र पर रैगिंग और प्रताड़ना के लगाए गए आरोपों को डीन डॉ अरविंद घनघोरिया ने फर्जी बताया। डीन ने कहा कि एंटी रैगिंग कमेटी ने मामले की जांच कर इसे फर्जी पाया है। जांच कमेटी ने जूनियर और सीनियर दोनों वर्गों के सभी संबंधित छात्रों को बुलाकर बयान दर्ज किए, लेकिन सभी ने आरोपों से इनकार किया। जांच में स्पष्ट हुआ कि बेनाम शिकायत निराधार है। प्रथम दृष्टया यह किसी आपसी मतभेद के चलते की गई फर्जी शिकायत प्रतीत होती है। जूनियर छात्रों ने दो दिन पर सीनियरों पर फ्लैट में बुलाकर मारपीट, डराने-धमकाने और जबरन शराब पिलाने के आरोप लगाते हुए कॉलेज प्रबंधन को शिकायत की थी। शिकायत में सीनियरों में पूर्व में रैगिंग के मामले में सस्पेंड किए गए दो छात्रों का भी जिक्र था। इस बार रैगिंग की शिकायत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) को करने की नहीं बल्कि कॉलेज प्रशासन को एक गुमनाम पत्र मिला था। शिकायत के अनुसार 2025 बैच के जूनियर छात्रों को 2024 बैच के सीनियर छात्रों ने एक निजी फ्लैट पर बुलाया, जहां उनके साथ मारपीट की गई और जबरन नाचने के लिए मजबूर किया गया।

जूनियरों ने सीनियर छात्रों पर मतभेद के चलते आरोप लगाए

बोलने से भी डरे जूनियर

जांच कमेटी ने सीनियर और जूनियर छात्रों को अलग-अलग बुलाकर बयान दर्ज किए। जांच के दौरान रैगिंग की पुष्टि हुई। बताया गया कि घटनाओं के बाद जूनियर छात्र इतने डरे हुए थे कि पूछताछ के दौरान भी वे खुलकर अपनी बात नहीं रख पा रहे थे। डीन डॉ अरविंद घनघोरिया ने बताया कि कॉलेज प्रशासन ने इस मामले को गंभीरता से लिया है और विस्तृत जांच की जा रही है। शिकायत मिलने के तुरंत बाद एंटी-रैगिंग कमेटी ने जांच शुरू की और जूनियर व सीनियर छात्रों के बयान अलग-अलग दर्ज किए हैं।

जूनियर्स से फिल्डिंग कराई

हाल ही में एक अन्य शिकायत में जूनियर छात्रों ने खेल के दौरान उन्हें प्रताड़ित करने का आरोप लगाया था। उनका कहना है कि सीनियर छात्र क्रिकेट खेलते रहे और जूनियरों से घंटों तक बिना ब्रेक फील्डिंग करवाई गई। सीनियरों ने उन्हें बल्लेबाजी का मौका नहीं दिया और लंबे समय तक मैदान में खड़े रहने के लिए मजबूर किया। इस शिकायत की भी जांच की जा रही है।

दो सालों में आठ शिकायतें

अक्टूबर में प्रसूति और स्त्री रोग विभाग की पीजी प्रथम वर्ष की छात्रा ने रैगिंग में गंभीर मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया था। उसका आरोप था कि तनाव के चलते चार महीनों में उसका वजन 22 किलो कम हो गया और उसे 14 दिन की छुट्टी लेकर घर जाना पड़ा। बाद में यह शिकायत वापस ले ली गई। पिछले दो सालों में कॉलेज में रैगिंग से जुड़ी आठ से शिकायतें सामने आ चुकी हैं।

बंधक बनाने का आरोप

इसके पूर्व 18 नवंबर को जूनियर छात्रों ने यूजीसी में एक शिकायत दर्ज कराई थी, जिसे अगले दिन कॉलेज को भेज दिया गया। 20 नवंबर को एंटी-रैगिंग कमेटी की बैठक हुई, जिसके बाद चार सीनियर छात्रों को एक महीने के लिए निलंबित कर दिया गया। तब जूनियरों ने नियमित प्रताड़ित करने, गाली-गलौज, निजी फ्लैटों में मारपीट, शराब और सिगरेट पीने का दबाव तथा करीब तीन घंटे तक बंधक बनाए जाने के आरोप लगाए थे।

हॉस्टल में रैगिंग का मामला

दिसंबर 2024 में 'प्लीज हेल्प मी' नामक एक एक्स अकाउंट के जरिए हॉस्टल में रैगिंग का मामला उजागर किया गया था। इसके बाद कमेटी ने 54 छात्रों के बयान दर्ज किए थे, हालांकि सभी ने आरोपों से इनकार किया था। वहीं, यूजीसी में की गई एक अन्य शिकायत में हॉस्टल की छतों पर रातभर रैगिंग किए जाने और खेल गतिविधियों के दौरान उत्पीड़न के तहत छह घंटे तक खड़ा रखे जाने के आरोप लगाए गए थे।

वंदे भारत की ख़राब सीट की शिकायत की

इंदौर। नागपुर के लिए सोमवार को रवाना हुई वंदे भारत ट्रेन में सवार हुए एक यात्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शिकायत करते हुए लिखा कि सी-14 कोच में उनकी सीट नंबर 9 रिक्लाइन नहीं हो रही है। इतनी ज्यादा राशि देने के बाद भी इस परेशानी से उनकी 8 घंटे की यात्रा बेहद परेशानी भरी होगी। उन्होंने रेलवे की आधिकारिक हैंडल रेलवे सेवा को टैग कर मदद मांगी। शिकायत सामने आते ही रेलवे सेवा ने रतलाम डीआरएम को मामले में कार्रवाई करने के निर्देश देते हुए शिकायत दर्ज की। इस घटना ने वंदे भारत जैसी हाई-प्रोफाइल ट्रेन में मेंटेनेंस और क्वालिटी चेक को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। यात्रियों का कहना है कि प्रीमियम किराया लेने वाली ट्रेनों में सीट जैसी बुनियादी सुविधा का खराब होना बेहद आपत्तिजनक है।

ज्वेलर्स के यहां 35 लाख की चोरी

इंदौर। चोरों ने राऊ की सिलिकॉन सिटी में एक ज्वेलर्स की दुकान में धावा बोला और सोने-चांदी व डायमंड के करीब 35 लाख के जेवर चुरा ले गए। चोर ज्वेलरी दुकान में पड़ोस के मकान की बाहरी सीढ़ियों से घुसे। फिर छत के रास्ते से ज्वेलरी शॉप की पहली मंजिल पर जाकर दरवाजे का सेंट्रल लॉक तोड़ा और 8 मिनट में शॉप से 35 लाख के जेवर चुरा ले गए। पुलिस के मुताबिक चोरी की वारदात श्री ज्वेलर्स के यहां हुई। इसके संचालक देवेंद्र सोनी ने बताया कि वे दो दिन से बाहर थे। दुकान बेटा पलाश संभाल रहा। सोमवार सुबह दुकान पहुंचे तो सोने व डायमंड के मुख्य जेवर गायब मिले। दुकान में पहली मंजिल का गेट टूटा मिला। रहवासियों का आरोप है कि सिलिकॉन सिटी में पुलिस की गश्त नहीं होती है। बीट के जवान दिन व शाम को एक राउंड लेकर निकल जाते हैं। बायपास तक कॉलोनी फैली है। वारदात के बाद चोर, बदमाश बायपास से आसानी से निकल जाते हैं। 15 दिन में इलाके में 12 चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं।

शहर के ट्रैफिक में कोई सुधार नहीं हो रहा

इंदौर। ट्रैफिक जाम को लेकर चार बार हाई कोर्ट के दखल के बावजूद कोई सुधार नहीं दिख रहा। हेल्पलाइन नंबर पर हर महीने 400 शिकायतें मिलने के बावजूद सुधार नहीं हुआ। शहर के 8 इलाके ऐसे हैं, जहां रोज 15 मिनट से पौन घंटे तक जाम के हालात बनते हैं। खजराना चौराहा, राऊ-शिप्रा बायपास और जवाहर मार्ग सहित कई जगह डेढ़ से 2 घंटे तक जाम के हालात बनते हैं। लोगों का कहना है कि बार-बार इन इलाकों में जाम के हालात बनने के बावजूद ट्रैफिक पुलिस अतिरिक्त जवान तैनात नहीं करती। ट्रैफिक डीसीपी आनंद कलादगी का कहना है, लोगों को अब एप से रूट डायवर्शन की सूचना देंगे। यह एप रियल टाइम ट्रैफिक अपडेट, घटना-दुर्घटना की तुरंत रिपोर्ट करने और चालान के ऑनलाइन फ्रॉड को रोकने के लिए बनाया जा रहा है। इसमें और भी फीचर रहेंगे। इस एप की सुविधा दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे बड़े शहरों में पहले से ही लागू है। इस एप से रियल टाइम अलर्ट भी मिलेंगे। जैसे कहां जाम लगा है। कहां वीआईपी मूवमेंट है।

दुकान में बदमाश डंडा लेकर घुसा, शीशे फोड़े

इंदौर। बाणगंगा इलाके में एक सैलून पार्लर में तोड़फोड़ और मारपीट का मामला सामने आया। एक बदमाश डंडा लेकर सैलून में घुस गया और जमकर उत्पात मचाया। आरोपी ने न सिर्फ दुकान में तोड़फोड़ की, बल्कि संचालक और वहां काम कर रहे कर्मचारी के साथ भी डंडे से मारपीट की। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पुलिस ने सोमवार को रितीक उर्फ अप्पू पिता दीपक बुंदेला के खिलाफ मारपीट, तोड़फोड़ और धमकी देने के मामले में केस दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक शिवम की 'वीरेन्द्र जेंट्स पार्लर' के नाम से दुकान है। सोमवार को वह अपनी दुकान पर मौजूद थे। उनके साथ कर्मचारी वीरू और कस्टमर कमल मेवाड़ा भी दुकान में थे। इसी दौरान कॉलोनी में रहने वाला रितिक जबरदस्ती दुकान में घुस आया और अपशब्द कहने लगा। उसने दुकान के गेट पर लगा कांच डंडे से तोड़ दिया।

इस बार स्वच्छता सर्वेक्षण 173 बिंदुओं पर

इंदौर। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में 10 चैप्टर और 173 बिंदुओं पर इंदौर की परख होगी। तैयारियों को लेकर नगर निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव ने सोमवार को बैठक की। इस बार स्वच्छ सर्वेक्षण का 10वां संस्करण है, जिसकी थीम रखी गई है स्वच्छता की नई पहल, बढ़ाएं हाथ, करें सफाई साथ। इस बार के पैरामीटर में कचरा सेग्रीगेशन, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, स्वच्छता सुविधाओं तक पहुंच, प्रयुक्त जल प्रबंधन, स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता, सफाईकर्मियों का समग्र कल्याण, नागरिकों की प्रतिक्रिया और शिकायत निवारण। एयर क्वालिटी इंडेक्स को भी शामिल किया गया है। पूरे वर्ष डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से सिटीजन फीडबैक लिया जाएगा। पर्यटन और विरासत स्थलों पर विशेष सफाई व्यवस्था, स्वच्छ शहर जोड़ियों के लिए नई पुरस्कार श्रेणी व स्कूलों में व्यवहार परिवर्तन आधारित कार्यक्रम जोड़े गए हैं।

हैदराबाद-चेन्नई की चार फ्लाइट्स कैंसिल जयपुर उड़ान भी देरी के कारण निरस्त

इंदौर से रीवा सुविधा मिली, जोधपुर रूट के यात्रियों से सुविधा छीनी गई

इंदौर। दो सप्ताह बाद भी इंडिगो की उड़ानों के निरस्त होने का सिलसिला थम नहीं रहा। कंपनी ने सोमवार को इंदौर से हैदराबाद और चेन्नई की उड़ानों को निरस्त कर दिया, जिससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। इससे पहले रविवार रात को भी जयपुर से आने-जाने वाली उड़ानें रद्द की गई थीं। इंदौर एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार आज सुबह 6.50 बजे हैदराबाद से इंदौर पहुंचने और 7.25 बजे वापस हैदराबाद जाने वाली उड़ान, वहीं रात में 9:40 बजे चेन्नई से इंदौर आने और 10.10 बजे वापस चेन्नई जाने वाली उड़ान को इंडिगो ने निरस्त किया है। इस तरह कुल चार उड़ानें रद्द रहीं। इन उड़ानों में बुकिंग करा चुके यात्रियों को कंपनी की ओर से रिफंड और री-बुकिंग का विकल्प उपलब्ध कराया गया है।

जयपुर रूट पर भी परेशानी

इंडिगो ने रविवार रात 8.40 बजे इंदौर से जयपुर जाने वाली उड़ान को भी निरस्त कर दिया था। वहीं देरी के चलते रात 10 बजे जयपुर से इंदौर आने वाली उड़ान भी रद्द रही। बताया जा रहा है कि सुबह 6.35 बजे जयपुर जाने वाली उड़ान को निरस्त होने से बचाने के लिए विमान को इंदौर में ही रोका गया था। यह विमान रात और सुबह के यात्रियों को लेकर रवाना हुआ, लेकिन रात में यात्रा करने वाले यात्रियों को काफी परेशानी उठानी पड़ी।

जोधपुर बंद, रीवा शुरू

इंदौर के देवी अहिल्याबाई होल्कर विमानतल से सोमवार से रीवा के लिए सीधी उड़ान की शुरुआत की गई। हालांकि, इस नई सेवा के लिए इंडिगो एयरलाइंस ने इंदौर-जोधपुर फ्लाइट को बंद कर दिया। इस फैसले से जहां इंदौर से रीवा जाने वाले यात्रियों को सीधी सुविधा मिलेगी, वहीं जोधपुर रूट के यात्रियों को अब असुविधा का सामना करना पड़ेगा। फिलहाल इंदौर से राजस्थान के लिए केवल जयपुर और उदयपुर की सीधी उड़ानें ही संचालित रहेंगी। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले समय में कंपनी जोधपुर रूट पर दोबारा उड़ानें शुरू कर सकती है। लगातार उड़ानों के निरस्त होने से यात्रियों में नाराजगी देखी जा रही है और वे इंडिगो एयरलाइंस की उड़ान संचालन व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं।

'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान में स्कूलों में जागरूकता कार्यशालाएं

शिक्षा समाप्ति के बाद ही विवाह का निर्णय जरूरी और सही

इंदौर। बच्चों को पहले शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और सही उम्र व मानसिक-शारीरिक परिपक्वता के बाद ही विवाह पर विचार किया जाना चाहिए। कम उम्र में किया गया विवाह बच्चों के शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। यह बात समाजसेवी संगीता सिंह ने ब्रह्मलीन लक्ष्मण सिंह गौड़ शासकीय मालव कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिमरोल में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत आयोजित कार्यशाला में कही। कार्यशाला को संबोधित करते हुए बाल विवाह विरोधी उड़नदस्ता प्रभारी महेंद्र पाठक ने कहा कि बाल विवाह में शामिल होकर लिफाफा देना या समारोह में उपस्थिति दर्ज कराना भी कानूनन अपराध है। उन्होंने बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम की प्रमुख धाराओं की जानकारी देते हुए छात्राओं को इसके दुष्परिणामों से अवगत कराया। इस दौरान विद्यालय स्टाफ और बालिकाओं को बाल विवाह में शामिल न होने की शपथ भी दिलाई गई।

कार्यक्रम में ज्योतिषाचार्य जगदीश प्रसाद अग्निहोत्री, बाल संरक्षण अधिकारी भगवान दास साहू, उड़नदस्ता सदस्य देवेंद्र कुमार पाठक, शैलेश शर्मा सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। संचालन व्याख्याता अदिति वांगे ने किया तथा आभार प्राचार्य बबीता हरायण ने माना। कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देशन में जिले के विभिन्न हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूलों में लगातार कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। अभियान के तहत अब तक 12 विद्यालयों में आयोजन कर 2500 से अधिक बालक-बालिकाओं को बाल विवाह रोकथाम की जानकारी देकर शपथ दिलाई जा चुकी

शादी का झांसा देकर रिश्तेदार ने बंधक बनाया, आरोपी गिरफ्तार

मारपीट करने और धमकी देने के मामले में शिकायत दर्ज

इंदौर। एक युवती की शिकायत पर लसूड़िया पुलिस ने उसके रिश्तेदार के खिलाफ बंधक बनाकर रखने, मारपीट करने और धमकी देने के मामले में शिकायत दर्ज की। पीड़िता के अनुसार आरोपी ने उसका मोबाइल छीना और उसे कई दिनों तक बंधक बनाकर रखा। पुलिस के अनुसार 21 वर्षीय युवती की शिकायत पर आनंद निवासी बिचोली मर्दाना के खिलाफ कार्रवाई की गई है। युवती ने बताया कि 11 दिसंबर को वह तुलसी क्लीनिक, केलोद कांकड़ में काम के लिए गई थी। इस दौरान आनंद वहां आया और कहा कि वह उससे प्यार करता है और शादी करना चाहता है। इसके बाद आरोपी ने युवती को जबरन बाइक पर बैठाया और उसका मोबाइल अपने पास रख लिया। आनंद ने उसे कुछ समय तक साथ घुमाया और फिर देवास में कमरे में रखा। इसके बाद चित्तौड़गढ़ ले जाकर शादी के लिए दबाव बनाया और मारपीट की। आरोपी ने धमकी दी कि अगर शादी नहीं हुई तो परिवार के लोगों को जान से मार देगा। पीड़िता ने राहगीर की मदद से मोबाइल वापस लिया और परिवार से संपर्क किया। इसके बाद परिवार के लोग उसे लेने पहुंचे। टीआई तारेश सोनी ने बताया कि रात में आरोपी आनंद को गिरफ्तार कर लिया गया।

समय-सीमा की बैठक में सख्ती की गाज लापरवाह पटवारी और सचिव निलंबित

सीएम हेल्पलाइन व लोक सेवा गारंटी मामलों का तत्काल समाधान हो

इंदौर। कलेक्टर शिवम वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय में आयोजित समय-सीमा (टाइम लिमिट) एवं अंतर-विभागीय समन्वय समिति की बैठक में प्रशासन का सख्त और संवेदनशील चेहरा सामने आया। बैठक में सीएम हेल्पलाइन और लोक सेवा गारंटी अधिनियम के तहत दर्ज प्रकरणों की गहन समीक्षा की गई। कलेक्टर वर्मा ने 'समाधान हाथों-हाथ' पहल के तहत शिकायतकर्ताओं से सीधे संवाद कर कई मामलों का तत्काल निराकरण कराया। समय-सीमा में प्रकरणों का निराकरण नहीं करने पर कलेक्टर ने कड़ा रुख अपनाते हुए एक पटवारी और एक ग्राम पंचायत सचिव को निलंबित करने के निर्देश दिए। वहीं दो अधिकारियों पर आर्थिक पेनल्टी लगाने के आदेश भी जारी किए गए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जहां देरी से आवेदकों को आर्थिक नुकसान हुआ है, वहां संबंधित अधिकारी से वसूली की जाएगी। बैठक में राशन पात्रता पर्ची, राजस्व आदेशों के अमल, एमपीईबी और नगर परिषद बेटमा से जुड़े मामलों में लापरवाही सामने आई। ग्राम पंचायत लिंबोदा गारी में समग्र आईडी सत्यापन में देरी पर सचिव को निलंबित किया गया। वहीं, विद्युत कनेक्शन काटने के बाद जमा राशि लौटाने में देरी पर एमपीईबी अधिकारियों को उसी दिन भुगतान के निर्देश दिए गए। नगर परिषद बेटमा में नाम हटाने में विलंब पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी पर 5000 रुपए की पेनल्टी लगाई गई।

कलेक्टर ने बताया कि आवेदकों से रेंडम संवाद के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। बीते एक सप्ताह में 50 दिन से अधिक पुरानी लगभग 550 शिकायतों का निराकरण किया गया है। बैठक में रणजीत हनुमान मंदिर के लगभग रू. 7 करोड़ के जीर्णोद्धार कार्य, शासकीय हॉस्टलों के निरीक्षण अभियान और 23 दिसंबर को ड्राफ्ट मतदाता सूची के प्रकाशन की जानकारी भी दी गई। कलेक्टर वर्मा ने स्पष्ट किया कि सुशासन केवल समीक्षा नहीं, बल्कि समयबद्ध और परिणामकारी कार्रवाई का नाम है।

आईएएस संतोष वर्मा केस में आरोपियों को जमानत देने वाले जज का तबादला

पूर्व पदस्थ जज वीरेंद्र सिंह रावत और टाइपिस्ट नीतू सिंह आरोपी

इंदौर। आईएएस संतोष वर्मा से जुड़े फर्जी आदेश मामले में एक नया मोड़ सामने आया। इस प्रकरण में आरोपियों को जमानत देने वाले सेशन जज का तबादला कर दिया गया। इस मामले में इंदौर में पूर्व में पदस्थ जज वीरेंद्र सिंह रावत और कोर्ट की टाइपिस्ट नीतू सिंह आरोपी हैं। जानकारी के अनुसार, हाईकोर्ट जबलपुर के रजिस्ट्रार जनरल ने इंदौर जिला न्यायालय में पदस्थ सेशन जज प्रकाश कसेरा का तबादला आदेश जारी किया है। प्रकाश कसेरा को इंदौर से रामपुर सेशन कोर्ट में पदस्थ किया गया। यह आदेश एक दिन पहले पारित किया गया। एमजी रोड थाना पुलिस ने 2021 में आईएएस संतोष वर्मा के खिलाफ फर्जी न्यायिक आदेश तैयार करने के आरोप में केस दर्ज किया था। इस मामले में इंदौर में पूर्व में पदस्थ जज वीरेंद्र सिंह रावत और उनकी कोर्ट की टाइपिस्ट नीतू सिंह आरोपी हैं। सेशन जज प्रकाश कसेरा ने इस केस में पहले निलंबित जज वीरेंद्र सिंह रावत को अग्रिम जमानत दी थी। वहीं, टाइपिस्ट नीतू सिंह को पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद रिमांड अवधि के दौरान 19 दिसंबर 2025 को जमानत दी गई थी।

जानकारी के अनुसार, नीतू सिंह की गिरफ्तारी के बाद एसीपी विनोद दीक्षित ने बयान दिया था कि इस प्रकरण की जांच में संतोष वर्मा और निलंबित जज वीरेंद्र सिंह रावत पुलिस को सहयोग नहीं कर रहे हैं। पुलिस इस आधार पर दोनों की जमानत निरस्त कराने के लिए कोर्ट में आवेदन देगी।

हरसिद्धि पुल से फूल मंडी हटाई गई, स्वच्छता सर्वेक्षण से पूर्व सख्त कदम

इस कार्रवाई के समय आयुक्त दिलीप कुमार यादव मौजूद रहे

इंदौर। केंद्र सरकार द्वारा आगामी स्वच्छता सर्वेक्षण की गाइडलाइन जारी किए जाने के बाद इंदौर नगर निगम एक्शन मोड में आ गया है। इसी क्रम में गुरुवार सुबह निगम की टीम ने हरसिद्धि क्षेत्र में पुल पर और उसके आसपास लगने वाली फूल मंडी को हटाने की बड़ी कार्रवाई की। खास बात यह रही कि इस कार्रवाई के दौरान नगर निगम आयुक्त दिलीप कुमार यादव स्वयं मौके पर पहुंचे और पूरे अभियान की निगरानी की। यह पहला अवसर था जब फूल मंडी हटाने की कार्रवाई में आयुक्त खुद स्थल पर मौजूद रहे। सुबह-सुबह निगम की रिमूवल गैंग ने हरसिद्धि पुल पर लगने वाली हार-फूल और गुलदस्तों की करीब 15 से अधिक दुकानों को हटाया। दुकानों के पीछे और आसपास फैले फूल-पत्तियों के कचरे को भी तत्काल साफ कराया गया।

लंबे समय से यहां अव्यवस्था और गंदगी की शिकायतें मिल रही थीं, वहीं पुल पर मंडी लगने से यातायात व्यवस्था भी प्रभावित हो रही थी। कार्रवाई के दौरान आयुक्त दिलीप कुमार यादव ने जोनल अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि भविष्य में इस स्थान पर दोबारा किसी भी तरह की दुकान या ठेला नहीं लगना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वच्छता और यातायात दोनों दृष्टि से यह स्थान संवेदनशील है, इसलिए यहां किसी भी प्रकार की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

अब होगा सौंदर्यीकरण- आयुक्त ने बताया कि मंडी हटाए जाने के बाद इस स्थान का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। पुल के दोनों ओर पहले से लगी लोहे की जालियों पर अन्य क्षेत्रों की तर्ज पर जियोलॉजिकल गार्डन विकसित किया जाएगा, जिससे क्षेत्र की सुंदरता बढ़ेगी। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि आगे से यहां ठेले या अस्थायी दुकानें न लगें। निगम ने दुकान लगाने वालों को सख्त चेतावनी दी है कि यदि दोबारा इस स्थान पर दुकान लगाई गई तो सामान जब्त कर लिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि पुल पर दुकानों के कारण वाहन चालक सड़क पर ही गाड़ियां खड़ी कर देते थे, जिससे अक्सर जाम की स्थिति बनती थी। निगम की इस कार्रवाई से क्षेत्रवासियों ने राहत की सांस ली है।

संपादकीय

अरावली: सवाल नीयत का है

अरावली पर्वतमाला में सीमित खनन की अनुमति के केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव के आश्वासन के बाद भी पर्यावरण प्रेमियों का विरोध प्रदर्शन थम नहीं रहा है। ये प्रदर्शन उसी राजस्थान में हो रहा है, जहां से भूपेन्द्र यादव भी जीत कर आते हैं। दरअसल सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल में अरावली पहाड़ियों की परिभाषा को स्वीकार करने और टिकाऊ खनन से जुड़ी सिफारिशों को मंजूरी देने के बाद सरकार की व्यापक आलोचना हो रही है। विपक्ष का आरोप है कि इसमें सरकार की खनन माफिया से मिलीभगत है। सुप्रीम कोर्ट ने पहाड़ियों की नई परिभाषा पर जो मुहर लगाई है, उसी कारण लोगों में डर फैला है और पूरे उत्तर भारत में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि अरावली दुनिया की सबसे पुरानी भूगर्भीय संरचनाओं में से एक है, जो राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और राजधानी दिल्ली तक फैली हुई है। केंद्र सरकार की सिफारिशों के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अरावली की जिस परिभाषा को स्वीकार किया है, उसके अनुसार आसपास की ज़मीन से कम से कम 100 मीटर (328 फ़ीट) ऊंचे ज़मीन के हिस्से को ही अरावली पहाड़ी माना जाएगा। दो या उससे ज़्यादा ऐसी पहाड़ियां जो 500 मीटर के दायरे के अंदर हों और उनके बीच ज़मीन भी मौजूद हो, तब उन्हें अरावली श्रृंखला का हिस्सा माना जाएगा। इस बारे में पर्यावरणविदों का कहना है कि सिर्फ़ ऊंचाई के आधार पर अरावली को परिभाषित करने से कई ऐसी पहाड़ियों पर खनन और निर्माण का दरवाज़ा खुलने का ख़तरा पैदा हो जाएगा जो 100 मीटर से छोटी हैं, झाड़ियों से ढकी हुई और पर्यावरण के लिए ज़रूरी हैं। हालांकि केंद्र सरकार का कहना है कि नई परिभाषा का मक़सद नियमों को मज़बूत करना और एकरूपता लाना है, न कि सुरक्षा को कम करना। इसी संदर्भ में 'पीपल फ़ॉर अरावलीज़ समूह' की संस्थापक सदस्य नीलम आहलूवालिया के अनुसार नई परिभाषा अरावली की अहम भूमिका को कमज़ोर कर सकती है। अरावली उत्तर पश्चिम भारत में रेगिस्तान बनने से रोकने, भूजल को रीचार्ज करने और लोगों की आजीविका बचाने के लिए ज़रूरी है। विशेषज्ञों का कहना है कि छोटी-छोटी झाड़ियों से ढकी पहाड़ियां भी रेगिस्तान बनने से रोकने, भूजल रीचार्ज करने और स्थानीय लोगों के रोज़गार में अहम योगदान देती हैं। पर्यावरण कार्यकर्ताओं की मांग है कि सरकार अरावली क्षेत्रों को वैज्ञानिक मानकों से परिभाषित करे, जिसमें उसका भूगोल, पर्यावरण, वन्यजीव संपर्क और जलवायु संबंधी क्षमता शामिल हो। जबकि विपक्षी दलों का कहना है कि नई परिभाषा से पर्यावरण और पारिस्थितिकी को गंभीर नुक़सान पहुंच सकता है। सपा नेता अखिलेश यादव ने कहा कि अरावली की रक्षा को दिल्ली का अस्तित्व बचाने से अलग नहीं किया जा सकता। इस बारे में पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि 1,47,000 वर्ग किलोमीटर में फैली अरावली श्रृंखला का सिर्फ़ लगभग 2 प्रतिशत हिस्सा ही संभावित रूप से खनन के लिए इस्तेमाल हो सकता है और वह भी विस्तृत अध्ययन और आधिकारिक मंज़ूरी के बाद। एक इंटरव्यू में केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने आलोचनाओं को खारिज करते हुए कहा कि अरावली क्षेत्र में खनन गतिविधियां बेहद सीमित इलाके में ही अनुमत होंगी। यह पर्वत श्रृंखला मजबूत पारिस्थितिकीय सुरक्षा के तहत बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि अरावली क्षेत्र की मुख्य समस्या अवैध खनन है। इसे रोकने के लिए ही सुप्रीम कोर्ट ने यह परिभाषा दी है और इस पर अभी भी समीक्षा लंबित है। उन्होंने यह भरोसा भी दिया कि सरकार अरावली पर्वत माला की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। लेकिन सवाल नीयत का है। लोगों को सरकार की नीयत पर भरोसा नहीं हो रहा है। यह तभी बनेगा, जब आगे सरकार क्या करती है, यह साफ होगा।

अरावली पर्वत : भविष्य की आखिरी दीवार

नजरिया

नृपेंद्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

अरावली सदियों से राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर भारत के लिए एक प्राकृतिक कवच बनी हुई है। यह पर्वतमाला थार रेगिस्तान और शेष उपजाऊ भारत के बीच एक अदृश्य दीवार की तरह खड़ी रही है। इसकी चट्टानें और पहाड़ियाँ तेज़ हवाओं की गति को रोकती हैं, धूल और रेत को आगे बढ़ने से थामती हैं और इस प्रकार रेगिस्तान को बेकाबू फैलने से रोकती हैं। यदि आज भी राजस्थान पूरी तरह रेगिस्तान में नहीं बदला है, यदि हरियाणा और दिल्ली अब तक पूर्ण मरुस्थलीकरण से बचे हैं, तो इसके पीछे अरावली का मौन योगदान है। यह योगदान इतना स्वाभाविक रहा कि मनुष्य ने इसे कभी महसूस ही नहीं किया, और शायद यही उसकी सबसे बड़ी त्रासदी है।

जब पृथ्वी ने अपने विकास की पहली लंबी साँस ली होगी, जब महाद्वीपों का आकार तय हो रहा होगा और जीवन की संभावना धीरे-धीरे आकार ले रही होगी, उसी समय अरावली पर्वतमाला धरती की देह पर एक स्थिर, धैर्यवान और मौन संरक्षक के रूप में उभरी। लगभग दो सौ करोड़ वर्ष पुरानी यह पर्वत श्रृंखला केवल भूगर्भीय संरचना नहीं, बल्कि पृथ्वी के इतिहास की जीवित स्मृति है। यह वह साक्षी है जिसने जीवन के उद्भव को देखा, जलवायु के अनगिनत उतार-चढ़ाव सहे और मनुष्य के आगमन से बहुत पहले प्राकृतिक संतुलन की रक्षा का भार अपने कंधों पर लिया। अरावली हमें यह सिखाती है कि प्रकृति की महानता उसकी ऊँचाई या चमक से नहीं, बल्कि उसकी भूमिका, धैर्य और निरंतरता से मापी जाती है।

अरावली सदियों से राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर भारत के लिए एक प्राकृतिक कवच बनी हुई है। यह पर्वतमाला थार रेगिस्तान और शेष उपजाऊ भारत के बीच एक अदृश्य दीवार की तरह खड़ी रही है। इसकी चट्टानें और पहाड़ियाँ तेज़ हवाओं की गति को रोकती हैं, धूल और रेत को आगे बढ़ने से थामती हैं और इस प्रकार रेगिस्तान को बेकाबू फैलने से रोकती हैं। यदि आज भी राजस्थान पूरी तरह रेगिस्तान में नहीं बदला है, यदि हरियाणा और दिल्ली अब तक पूर्ण मरुस्थलीकरण से बचे हैं, तो इसके पीछे अरावली का मौन योगदान है। यह योगदान इतना स्वाभाविक रहा कि कभी महसूस ही नहीं किया, और शायद यही उसकी सबसे बड़ी त्रासदी है।

जल संरक्षण के क्षेत्र में अरावली की भूमिका किसी वरदान से कम नहीं रही। इसकी प्राचीन चट्टानें वर्षा जल को रोककर धीरे-धीरे धरती के गर्भ में समाहित करती हैं। यही जल भूजल बनकर कुओं, बावड़ियों, झीलों और नदियों को जीवन देता है। अरावली को सही अर्थों में 'वॉटर रिचार्ज ज़ोन' कहा जा सकता है। जब मानसून की बारिश तेज़ होती है, तब यह पर्वतमाला जल की गति को नियंत्रित करती है, बाढ़ की विभीषिका को कम करती है और पानी को बह जाने के बजाय संचित होने का अवसर देती है। यदि यह संरचना टूटती है, तो पानी केवल कुछ घंटों में बहकर नष्ट हो जाएगा, और धरती के नीचे का जल भंडार धीरे-धीरे खाली हो जाएगा। यही कारण है कि आज दिल्ली-एनसीआर और आसपास के क्षेत्रों में बढ़ते जल संकट की जड़ें कहीं न कहीं अरावली के क्षरण से जुड़ी हैं।

जलवायु संतुलन में अरावली की भूमिका उतनी ही गहरी और मौन है। यह पर्वतमाला तापमान को नियंत्रित करने में सहायक रही है। इसके जंगल, झाड़ियाँ और चट्टानें वातावरण में नमी बनाए रखती हैं और गर्मी की तीव्रता को कम करती हैं। यदि अरावली का विनाश जारी रहा, तो तापमान में निरंतर वृद्धि होगी, हीट आइलैंड प्रभाव बढ़ेगा और मानसून का स्वरूप बिगड़ सकता है। बारिश अनियमित होगी, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं सूखा पड़ेगा। धूल भरी आँधियाँ और प्रदूषण सामान्य जीवन का हिस्सा बन जाएँगे। यह परिवर्तन अचानक नहीं, बल्कि धीरे-धीरे होंगे, और शायद इसी कारण हम उनकी गंभीरता को समय रहते समझ नहीं पा रहे हैं।

अरावली केवल पत्थरों और पहाड़ियों की श्रृंखला नहीं है, यह जैव विविधता का एक जीवंत संसार है। इसके जंगलों में तेंदुआ, सियार, नीलगाय, लोमड़ी, असंख्य पक्षी और सरीसृप प्रजातियाँ पनपती रही हैं। यहाँ औषधीय पौधों का भंडार है, जिनका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में सदियों से होता आया है। यह पर्वतमाला इन जीवों के लिए केवल आवास नहीं, बल्कि सुरक्षा कवच भी है। जब जंगल कटते हैं और पहाड़ तोड़े जाते हैं, तो केवल पत्थर नहीं गिरते, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र की नींव हिल जाती है। कई प्रजातियाँ अपने घर खो देती हैं, और कुछ हमेशा के लिए इस धरती से विलुप्त हो जाती हैं। यह हानि केवल प्रकृति की नहीं, बल्कि मानवता की भी है, क्योंकि जैव विविधता का संतुलन ही जीवन की निरंतरता को बनाए रखता है।

आज अरावली अपने अस्तित्व के सबसे कठिन दौर से गुजर रही है। खनन की भूख, शहरी विस्तार की अंधी दौड़ और विकास की संकीर्ण परिभाषा ने इस प्राचीन पर्वतमाला को खतरे में डाल दिया है। मशीनों की दहाड़, विस्फोटों की गूँज और ट्रकों की आवाज़ ने उस मौन को तोड़ दिया है, जिसमें अरावली सदियों से धरती की रक्षा करती आई थी। विडंबना यह है कि जो पर्वत करोड़ों वर्षों तक भूकंपों, आँधियों और जलवायु परिवर्तनों को सहता रहा, वह आज मानव की लालच से भयभीत है। यह भय केवल अरावली का नहीं, बल्कि हमारे भविष्य का है।

इस संकट को और गहरा बनाती है वह सोच, जो पर्वत की परिभाषा को केवल उसकी ऊँचाई से जोड़कर देखती है। यह कहा जा रहा है कि जिन पहाड़ियों की ऊँचाई सौ मीटर से कम है, वे पहाड़ नहीं मानी जाएँगी। यह दृष्टिकोण प्रकृति की आत्मा को समझने में पूरी तरह विफल है। अरावली भले ही हिमालय जैसी ऊँचाई न रखती हो, लेकिन उसकी उम्र, स्थिरता और उपयोगिता किसी भी विशाल पर्वत से कम नहीं है। यह बूढ़ी है, पर कमजोर नहीं; यह शांत है, पर निष्क्रिय नहीं। इसकी ताकत उसके विस्तार, उसकी जड़ों और उसके धैर्य में है। इसे केवल ऊँचाई के पैमाने पर तौलना, प्रकृति के साथ घोर अन्याय है।

अरावली के टूटने का प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी गहरा असर पड़ेगा। खनन गतिविधियों से हवा में धूल और जहरीले कण फैलते हैं, पानी में भारी धातुएँ घुल जाती हैं। इसका परिणाम दमा, टीबी, त्वचा रोग, आँखों की बीमारियों और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के रूप में सामने आता है। जो विकास आज कुछ लोगों को आर्थिक लाभ देता दिख रहा है, वही विकास कल समाज को असाध्य रोगों और जीवन की गिरती गुणवत्ता की ओर धकेल सकता है। यह एक ऐसी कीमत है, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ चुकाने के लिए मजबूर होंगी।

प्राकृतिक आपदाओं का खतरा भी अरावली के विनाश से कई गुना बढ़ जाता है। जब पहाड़ और जंगल नहीं होते, तो मिट्टी को बाँधने वाली शक्ति कमजोर पड़ जाती है। परिणामस्वरूप मृदा अपरदन बढ़ता है, बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएँ आम हो जाती हैं, और ज़मीन धँसने लगती है। यह सब केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शहर भी इसकी चपेट में आते हैं। शहरी बाढ़, जलभराव और बुनियादी ढाँचे का क्षरण इसी असंतुलन का परिणाम है। अरावली आज खामोश होकर हमसे प्रश्न कर रही है–क्या उसकी आवश्यकता समाप्त हो गई है? यह प्रश्न केवल एक पर्वतमाला का नहीं, बल्कि हमारी सोच, हमारी संवेदनशीलता और हमारे विकास के दृष्टिकोण का है। यदि हमने आज अरावली को खो दिया, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमसे पूछेंगी कि जो तुम्हें बचाता था, जो तुम्हारे लिए जल, हवा और संतुलन का आधार था, तुमने उसे क्यों नहीं बचाया। उस प्रश्न का उत्तर हमारे पास तभी होगा, जब आज हम विकास और विनाश के बीच का अंतर समझें।

अरावली को बचाना केवल पर्यावरण संरक्षण का मुद्दा नहीं है, यह अपने भविष्य की रक्षा का प्रश्न है। यह स्वीकार करने का समय है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य ही स्थायी विकास का एकमात्र रास्ता है। अरावली हमें आज भी अवसर दे रही है कि हम रुकें, सोचें और अपनी दिशा बदलें। यदि हमने उसकी इस खामोश पुकार को सुन लिया, तो शायद हम आने वाली पीढ़ियों को एक संतुलित, सुरक्षित और जीवंत धरती सौंप सकेंगे। लेकिन यदि हम बहरे बने रहे, तो इतिहास हमें उस पीढ़ी के रूप में याद रखेगा, जिसने अपने ही संरक्षक को नष्ट कर दिया।

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

उपभोक्ता जागरूक होंगे, तभी मिलेगा इंसाफ

उपभोक्ताओं के विभिन्न हितों और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए देश में प्रतिवर्ष 24 दिसम्बर को 'राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस' मनाया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, उनके हितों के लिए बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियमों तथा उनके अंतर्गत आने वाले कानूनों की जानकारी देना है। दरअसल ऑनलाइन खरीददारी हो या ऑफलाइन, ग्राहकों को कई बार सामान की गड़बड़ी अथवा अन्य प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इसी तरह की समस्याओं से उन्हें निजात दिलाने तथा उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। हालांकि वर्ष 2020 तक विभिन्न ई-कॉमर्स साइटों से ऑनलाइन खरीददारी को लेकर उपभोक्ताओं को कोई संरक्षण प्राप्त नहीं था लेकिन उपभोक्ता संरक्षण कानून-2019 (कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट-2019) में ई-कॉमर्स को भी दायरे में लाकर उपभोक्ताओं को और मजबूती देने का प्रयास किया गया। पुराना उपभोक्ता संरक्षण कानून करीब साढ़े तीन दशक पुराना हो चुका था, जिसमें समय के साथ बड़े बदलावों की जरूरत महसूस की जा रही थी। इसीलिए ग्राहकों के साथ अक्सर होने वाली धोखाधड़ी को रोकने और उपभोक्ता अधिकारों को ज्यादा मजबूती प्रदान करने के लिए 20 जुलाई 2020 को 'उपभोक्ता संरक्षण कानून-2019' (कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट-2019) लागू किया गया, जिसमें उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की ठगी और धोखाधड़ी से बचाने के लिए कई प्रावधान शामिल हैं।

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस वास्तव में उपभोक्ताओं को उनकी शक्तियों और अधिकारों के बारे में जागरूक करने का महत्वपूर्ण अवसर है। भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की शुरूआत मुम्बई में वर्ष 1966 में हुई थी। तत्पश्चात् पुणे में वर्ष 1974 में ग्राहक पंचायत की स्थापना के बाद कई राज्यों में उपभोक्ता कल्याण के लिए संस्थाओं का गठन किया गया। इस प्रकार उपभोक्ता हितों के संरक्षण की दिशा में यह आन्दोलन आगे बढ़ता गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पहल पर 9 दिसम्बर 1986 को उपभोक्ता संरक्षण विधेयक पारित किया गया, जिसे राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बार 24 दिसम्बर 1986 को देशभर में लागू किया गया। पिछले कई वर्षों से भारत में प्रतिवर्ष इसी दिन राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण दिवस मनाया जा रहा है। यह दिवस मनाए जाने का मूल उद्देश्य यही है कि उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए और अगर वे धोखाधड़ी, कालाबाजारी, घटतौली इत्यादि के शिकार होते हैं तो वे इसकी शिकायत उपभोक्ता अदालत में कर सकें।

उपभोक्ता संरक्षण कानून में स्पष्ट उल्लेख है कि प्रत्येक वह व्यक्ति उपभोक्ता है, जिसने किसी वस्तु या सेवा के क्रय के बदले धन का भुगतान किया है या भुगतान करने का आश्वासन दिया है और ऐसे में किसी भी प्रकार के शोषण अथवा उत्पीड़न के खिलाफ वह अपनी आवाज उठा सकता है तथा क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। खरीदी गई किसी वस्तु, उत्पाद अथवा सेवा में कमी या उसके कारण होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के बदले उपभोक्ताओं को मिला कानूनी संरक्षण ही उपभोक्ता अधिकार है। यदि खरीदी गई किसी वस्तु या सेवा में कोई कमी है या उससे आपको कोई नुकसान हुआ है तो आप उपभोक्ता फोरम में अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम ने उपभोक्ताओं को छह प्रमुख अधिकार प्रदान किए हैं, जिनमें सुरक्षा का अधिकार के तहत खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं से बचाव का अधिकार, सूचना का अधिकार के तहत वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा, शुद्धता और कीमत की सही जानकारी का अधिकार, विकल्प का अधिकार के तहत प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों पर वस्तुओं और सेवाओं का चयन का अधिकार, सुने जाने का अधिकार के तहत उपभोक्ता की शिकायतों और समस्याओं पर ध्यान दिया जाना का अधिकार, निवारण का अधिकार के तहत उपभोक्ता की शिकायतों और समस्याओं पर ध्यान दिया जाना का अधिकार, उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार के तहत अनुचित व्यापार प्रथाओं और शोषण के खिलाफ न्याय का अधिकार शामिल हैं। जहां तक उपभोक्ता की जिम्मेदारियों की बात है तो उपभोक्ताओं को चाहिए कि वे खरीदारी से पहले उत्पाद की गुणवत्ता और वैधता की जांच करें, नकली और घटिया उत्पादों से बचने के लिए प्रमाणित ब्रांड्स को ही प्राथमिकता दें, अपनी शिकायतों को दर्ज कराने में सक्रिय रहें, जागरूकता फैलाने में योगदान दें।

अगर उपभोक्ताओं का शोषण होने और ऐसे मामलों में उनके द्वारा उपभोक्ता अदालत की शरण लिए जाने के बाद मिले न्याय के कुछ मामलों पर नजर डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि उपभोक्ता अदालतों का उपभोक्ताओं के हितों के संरक्षण में क्या योगदान है। दरअसल विभिन्न छोटी-बड़ी समस्याओं का सामना जीवन में कभी न कभी हम सभी को करना पड़ता है लेकिन अधिकांश लोग अपने अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ते। इसका प्रमुख कारण यही है कि देश की बहुत बड़ी आबादी अशिक्षित है, जो अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति अनभिज्ञ है। हालांकि जब शिक्षित लोग भी अपने उपभोक्ता अधिकारों के प्रति उदासीन नजर आते हैं तो हैरानी होती है। यदि आप एक उपभोक्ता हैं और किसी भी प्रकार के शोषण के शिकार हुए हैं तो अपने अधिकारों की लड़ाई लड़कर न्याय पा सकते हैं। कोई वस्तु अथवा सेवा लेते समय हम धन का भुगतान तो करते हैं पर बदले में उसकी रसीद नहीं लेते। शोषण से मुक्ति पाने के लिए सबसे जरूरी है कि आप जो भी वस्तु, सेवा अथवा उत्पाद खरीदें, उसकी रसीद अवश्य लें। यदि आपके पास रसीद के तौर पर कोई सबूत ही नहीं है तो आप अपने मामले की पैरवी सही ढ़ंग से नहीं कर पाएंगे। पिछले कुछ वर्षों में ऐसे अनेक मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें उपभोक्ता अदालतों से उपभोक्ताओं को पूरा न्याय मिला है लेकिन आपसे यह अपेक्षा तो होती ही है कि आप अपनी बात अथवा दावे के समर्थन में पर्याप्त सबूत तो पेश करें। उपभोक्ता अदालतों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनमें लंबी-चौड़ी अदालती कार्रवाई में पड़े बिना ही आसानी से शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। यही नहीं, उपभोक्ता अदालतों से न्याय पाने के लिए न तो किसी प्रकार के अदालती शुल्क की आवश्यकता पड़ती है और मामलों का निपटारा भी शीघ्र होता है।

जावेद अख्तर जी, डुबोया हमको होने ने...

सामयिक

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं

शाइर भाई, आप ही तो कहते हैं कि... 'घर से निकलते ही, कुछ दूर चलते ही, रस्ते में है उसका घर' ...फिर काहे किसी प्रायोजित बहस में उसे खोज रहे हैं।

कहते हैं कि चन्द्रमा पृथ्वी का मन है। जब पूर्णिमा का चाँद समुद्रों के जल को आंदोलित करके उनकी ऊँची उठती लहरों पर डोलता है तो लगता है कि जैसे पृथ्वी का मन डोल रहा है। फिर डोलता हुआ सागर शान्त हो जाता है। बिलकुल इसी तरह सबकी देह में बसा सागर भी पछाड़ें मारता है। अपने ही तट को तोड़ता है और उसे भी शान्त होना पड़ता है। बाढ़ आयी नदी भी शान्त हो जाती है। आंधियाँ थककर शान्त होती देखी जाती हैं।अशांति जीवन का स्थायी भाव नहीं है, वह शान्ति की अपील है।

कहते हैं कि सूर्य पृथ्वी की आत्मा है। जीवन पर उजली-शान्त धूप छाई हुई है। कई तरह की हवाओं में उड़ती धूल इस उजली धूप को मैला भी करती है। आंखों में फैले उज्ज्वल आकाश को धुन्ध से भरती है। जीवन में बसी आग को कामनाओं की बयारें उकसाती ही रहती हैं। पर आग में भड़ककर शान्त हो जाने का गुण भी तो है। अचानक घिर आये बादल छँट ही जाते हैं और शान्त-नीले आकाश में शरद ऋतु का पूरा चाँद दीखता है।

पूरे जीवन पर छाया नील-नीरव आकाश शान्ति की अपील कर रहा है। राज-काज-समाज बदलते रहते हैं पर सृष्टि कई युगों तक अपने धीरज को नहीं खोती। इस धीरज के विपरीत जीवन को ढालना संभव नहीं। कहते हैं कि दैहिक, दैविक और भौतिक ताप के संतुलन से ही सबका जीवन चलता है पर हमारे शरीर और प्रकृति के बीच तापमान का संतुलन बिगड़ता ही चला जा रहा है। जल और औषधियाँ देने वाले पर्वत दरककर धँस रहे हैं। हम सबके जीने के लिए दूसरी पृथ्वी कहाँ से लायेंगे? हम अपने संयम से पृथ्वी को दुहने की कला भूलकर कैसे जी पायेंगे? पृथ्वी बार-बार काँप रही है और फिर भी सबको जगह दिए रहने का अपना धीरज नहीं खो रही। सारी खुदाई का स्वभाव यही है जिसमें सब अपने मन का ख़ुदा तराश लेते हैं, बंदगी कर लेते हैं।

क्या वे लोग पूरे चाँद की रोशनी में अब भी नहीं सोचेंगे, जिनका इस्तेमाल कुटिल राजनीतिक ताक़तों ने धरती पर अराजकता के बीज बोने के लिए किया है और वे धरती पर कचरे की तरह लाशें बिखराते रहे हैं। आखिर इस हिंसा से उन्हें अब तक क्या मिला... बेबसी, भूख और कचरे की तरह धरती पर बिखरा पड़ा उन लोगों का घरबार जो सबके साथ जीना चाहते हैं। पृथ्वी पर नदी, पेड़, पहाड़ और मनुष्य सहित सभी प्राणियों का जीवन परस्पर आश्रित है। इसे सँभाले रखने के लिए बड़ी इन्सानी बिरादरी चाहिए जो आपस में मिलकर सच्ची खुदाई ख़िदमतगार होने की जिम्मेदारी निभा सके। फटे हुए मन के आकाश को रफ़ूगरों की तलाश है किसी खुदा और भगवान की नहीं।

प्रकृति अपना स्वभाव नहीं बदलती है। उसके आगे किसी का हठ भी नहीं चलता। बस मनुष्य के रचे न्याय और अन्याय के रूप बदलते रहते हैं। अब दूर से परमाणु बम आक्रांत करता है। नया विश्व साहूकार अपनी उधारी में हर देश को फाँसकर उसके प्राकृतिक साधनों को दूर से ही लूट रहा है। जनता के द्वारा चुनी हुई सरकारें साहूकार के आगे घुटने टेक रही हैं। व्यापारियों के द्वारा प्रशिक्षित लुटेरे और आतंकी पूरी दुनिया में हड़कंप मचाये हुए हैं। अंधेरे का क्षेत्र बनती जा रही दुनिया सिर्फ विज्ञापन में चमक रही है।

कर्मकुशल और हुनरमंद जीवन उन साधनों से लगातार दूर किया जा रहा है जिनसे उसकी गुजर-बसर होती आयी है। धरती, पानी और रसोई की आग पर अब राज्य और व्यापारिक गठबंधन का कब्जा है। संगठित मज़हबी ज़िद के आगे उदारता और सहकार की भावना आहत हो रही है। राजनीतिक व्यापारिक स्वार्थ और कौमी क्रूरता आज भी जीवन पर बोझ बनी हुई है।

वह जीवन-धर्म आभाहीन होता जा रहा है जिसे साधकर परस्पर आश्रित होने की भावना जागती है। उससे यह बोध होता है कि सब अपने स्वभाव को पहचानकर ऐसी साम्य अवस्था को पा सकते हैं जहाँ अतीत की शत्रुता नहीं, मैत्री का नया वर्तमान प्रकट होता है। हम यह क्यों नहीं समझ पा रहे कि बीते समय में जीने का कोई उपाय नहीं। वहाँ खण्डहरों के सिवा कुछ नहीं।जो जाति अपने आपको वर्तमान का सामना करने को नहीं सौंपती, वह मिटकर अतीत में खो जाती है।

विश्व का जीवन हमारी हथेलियों पर खिंची रेखाओं की तरह सदियों से आपस में उलझा हुआ है। उसकी उलझनों को सुलझाने का दावा करने वाली राजनीतिक शक्तियाँ विफल हो चुकी हैं! अपने हितों को सबसे आगे रखकर जो महाशक्तियाँ हस्तक्षेप करती रहती हैं वे तो पाँच अंगुलियों से ज़्यादा नहीं हैं। कुछ देशों में अब तक किये गये उनके हस्तक्षेप उनकी विफलताओं का ही प्रमाण दे रहे हैं। अकेली पाँच अंगुलियाँ कभी कोई पकड़ नहीं बना सकतीं उन्हें तो सबकी हथेलियों की गर्माहट भी चाहिए। अक्सर एक-दूसरे से हाथ मिलाकर अपने-अपने देश लौट जाते नेताओं को हम देखते ही रहते हैं और मन ही मन सोचते रह जाते हैं कि इनके मन आपस में क्यों नहीं मिल पाते? राजनीतिक और मानवीय मन के बीच दूरी क्यों बनी रहती है? जनाब जावेद अख़्तर, आपको मिर्ज़ा ग़ालिब का यह शेर खूब याद आता ही रहता है, वही मैं भी दुहराये देता हूँ... न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता। डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

चूहों के अस्पताल

इस समय सरकारी अस्पतालों में मरीजों की आवाजाही कम चूहों की ज्यादा दिख रही है। मरीज को पर्ची कटवा लाईन में आना पड़ता है पर चूहा बिना पर्ची बिन लाईन के सीधे प्रवेश कर जाता है। चूहे 'शायद अस्पताल को ओपन ज़ू समझ रहे हैं जहां इंसान पिंजरे में व वे आजाद हैं। स्मार्ट हो चले चूहे अब जनरल वार्ड में कम आईसीयू में ज्यादा समय रह रहे हैं। आईसीयू में जब चूहा दौड़ता है तो मानीटर की बीप बदल जाती है। डॉक्टर को लगता है कि मरीज की हालत बिगड़ रही है पर असल में व्यवस्था की हालत बिगड गई होती है। रात में चूहा जब मशीनों के तार पर दौड़ता तो मरीज की सांस धौकनी की तरह चलने लगती है। आत्मनिर्भर भारत के आत्मनिर्भर चूहों की संख्या व उनका आत्मविश्वास देखकर लग रहा कि चूहे स्थायी कर्मचारी व डॉक्टर नर्स संविदा पर हैं। अस्पताल के चूहे मस्त व तंदरूस्त परन्तु मरीज पस्त व कमजोर दिखते हैं। यानि चूहे बैखौफ व मरीज व व्यवस्था खौफ में। लगता है चूहों ने अस्पतालों के आईसीयू को अपना व्हीआईपी गेस्ट हाऊस समझ लिया है। अब कोई भी मरीज अस्पताल में अकेलापन नही महसूस करता। कम से कम एक दो चूहों के साथ की पैकेज में गारंटी।'

शवगृह में मुर्दे का डॉक्टर के पोस्टमार्ट्म के बाद चूहे दूसरा पोस्टमार्ट्म अपने हुनर के अनुसार अलग से कर रहे। कोई आंख को तो कोई नाक को तो कोई बांह को कुतर कर कर डालता है। अस्पताल में रेबीज इंजेक्शन, आक्सीजन व जरूरी दवाओं का स्टॉक खत्म हो जाता है परंतु चूहों का भरपूर है। अस्पताल प्रशासन नाक-कान कुतर जाने के बाद ही सामने आ कहता है कि स्थिति नियंत्रण में हैं। हां नियंत्रण में है पर चूहों के क्योंकि वे तय करते हैं कि नाक कुतरना है कि कान कि आंख। चूहों की आईसीयू व नवजात गहन चिकित्सा वार्ड तक में उपस्थिति प्रमाण है अव्यवस्था की व्यवस्था का। अस्पताल में चूहे यानि व्यवस्था वेंटीलेटर पर। मरीज सोचता है कि कौन सा चूहा ज्यादा खतरनाक है रात चार पैरों वाला जो उसके दो पैरों के उपर से निकल गया या दिन का दो पैर वाला जो उसके हक का मंहगा इंजेक्शन स्टोर से निकलवा कालाबाजार में बेच आया।

वैसे चार पैरों वाले चूहों के बनिस्बत ये दो पैर वाले व्यवस्था के चूहों की कुतरने की क्षमता ज्यादा होती है। इनका कुतरना कई प्रकार का होता है जैसे कि सड़क का डामर, पुल/तालाब का लोहा/सीमेंट कुतर डालना। इन वाले चूहों का पूरा एक पदसोपान होता है। कुतरन की कतरन ईमानदारी से बड़े चूहों तक पंहुचाते हैं। बड़े चूहों में एक खास बात होती है कि वे अपने छोटों को कुतरने की पूरी छूट देते हैं।

व्यवस्था दिखावे के लिए चूहों को नियंत्रित करने बिल्लियां पालती है। पर वे कालांतर में चूहों से संगाबित्ती कर लेती हैं। अस्पताल के भूखे चूहों पर इतना हंगामा बरपा जा रहा है। जबकि व्यवस्था के पाले-पोसे मुसतण्डे चूहे तो फाईल कुतर जाते हैं। बजट चबा जाते हैं। जवाबदेही को निगल जाते हैं।योजनाओं में छेद कर निजी एटीएम बना जब जरूरत अपने हिस्से की निकासी करते रहते हैं। दोनों प्रकार के चूहों में अंतर केवल इतना है वो बिल में रहते हैं ये वातानुकूलित कमरों में। अस्पताल में दवा न हो तो बजट का रोना रोया जाता है, पर व्यवस्था के चूहों के लिए बजट की समस्या कभी नहीं होती। व्यवस्था के बड़े चूहे छोटे चूहों का एक ऐसा उड़न दस्ता भी तैयार रखते है जो कि इशारा मिलते ही बड़ी-बड़ी हस्तियों के काले कारनामों की नस्तियों को चिंदी-चिंदी कर देती है। चार पैर वाले चूहे को तो जहर देकर मारा जा सकता है पर दो पैर वाले चूहों की दवा राजनैतिक इच्छाशक्ति जहर से ज्यादा दुर्लभ है।

उसके वाले चूहों की धमाचौकड़ी का ज्यादा हल्ला मचने पर व्यवस्था कहती है कि हम सुधार कर रहे हैं। पिंजरा व बिल्ली दोनों की खरीदी के लिए नस्ती बढ़ा दी है। उड़न दस्ते के चूहे इस नस्ती को भी मुकाम तक पंहुचने के पहले ही कुतर कर नीति का प्रारूप ही बदल डालते हैं। उधर व्हीआईपी कार्यालयों में घुसपैठ किए मोटे पारदर्शिता के हिमायती चूहे मीडिया में आने के पहले गोपनीय पत्र को सोशल मीडिया पर भेज गोपनीयता को कुतरने का कार्य करते रहते हैं।

अस्पताल हो या कार्यालय चूहा दौड़ रहा यानि सिस्टम सो रहा। यह व्यवस्था की असली आडिट रिपोर्ट है। इसके बाद किसी और आडिट की जरूरत नहीं। बल्कि आडिट फीस का भुगतान तो इन चूहों को करना चाहिए।

अंत में सवाल यह नही है कि अस्पताल में चूहे क्यों कुतरन में लगे हैं ? असली सवाल तो यह है कि जब व्यवस्था को चलाने वाले ही जगह-जगह से उसे कुतर रहे तो फिर बिलों के चूहों का काहे का दोष। अस्पतालों के चार पैर वाले चूहे तभी हटेंगे जब व्यवस्था के दो पैर वाले चूहे हटें। पर उनको हटाना नामुमकिन सा क्योंकि वे हटाने वालों के रिश्तेदार हैं।

स्मरण

मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

श्याम बाबू सिनेमा में संविधान के मूल्य जिन्दा रखते थे

करीब से जानने पर यह और स्पष्ट हुआ कि श्याम बेनेगल के लिए सिनेमा कभी भी केवल पेशा नहीं रहा। वह उनके जीवन की बुनियादी भाषा थी, दुनिया को समझने और समझाने का जरुरी माध्यम। बीमारी के बावजूद उनकी स्मृति उतनी ही सजग थी, संदर्भ उतने ही सटीक और दृष्टि उतनी ही व्यापक। वे बीते समय को नोस्टेलजिकली नहीं देखते थे, बल्कि वर्तमान से जोड़कर परखते थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे जानबूझकर हर बात को दर्ज करा देना चाहते हों, इस उम्मीद में कि सिनेमा आने वाले समय में भी समाज से संवाद करता रहे। उस बातचीत में कोई जल्दबाज़ी नहीं थी। करीब 90 मिनट में आपने न अपने काम का बखान, न उपलब्धियों का प्रदर्शन किया था। वे बहुत साधारण ढंग से कह रहे थे' कोई भी व्यक्ति कुछ भी करे, उसमें मूल्य तो होंगे ही।' यह वाक्य एक सामान्य टिप्पणी की तरह आया, लेकिन उसमें उनका पूरा सिनेमा समाया हुआ था। वे मानते थे कि सवाल यह नहीं है कि फ़िल्म में मूल्य हैं या नहीं, सवाल यह है कि फ़िल्मकार उन्हें पहचानता है या उनसे मुँह मोड़ लेता है। सिनेमा, उनके लिए, इसी चुनाव का नाम था।

फ़िल्मकार स्वर्गीय श्याम बेनेगल को याद करना उस दौर को याद करना है, जब सिनेमा अपने समय से आँख मिलाकर बात करता था। जब परदे पर दिखाई देने वाली कहानी सिर्फ़ मनोरंजन नहीं होती थी, बल्कि समाज के भीतर चल रही हलचलों का साक्ष्य भी होती थी। श्याम बेनेगल का जाना उस सिनेमा का जाना है, जो शोर नहीं करता था, लेकिन बहुत गहराई से असर छोड़ता था।

उनसे बातचीत करते हुए कभी ऐसा नहीं लगा कि सामने कोई 'महान निर्देशक' बैठा है। वे सहज थे, ठहरे हुए थे, और सबसे ज़्यादा ध्यान से सुनने वाले व्यक्ति थे। सिनेमा पर उनकी बातें किसी सिद्धांत की तरह नहीं आती थीं, बल्कि जीवन से उपजी हुई लगती थीं। वे बार-बार इस बात पर लौटते थे कि फ़िल्म बनाना तकनीक या व्यवसाय से पहले एक नैतिक चुनाव है।

पिछले वर्ष उनके कार्यालय में बातचीत का अवसर मिला था। उम्र और बीमारी की थकान उनके शरीर पर साफ़ दिखाई देती थी, लेकिन सिनेमा का ज़िक्र आते ही उनकी आँखों में एक अलग ही चमक उभर आती थी। शब्द बोलने से पहले वे पल भर रुकते, साँस सँभालते, लेकिन जैसे ही बात फ़िल्म, समाज या संविधान की ओर मुड़ती, उनकी आवाज़ में दृढ़ता लौट आती । उस बातचीत के दौरान बार-बार यह महसूस हुआ कि सामने बैठा व्यक्ति अपने जीवन की अंतिम पारी में नहीं, बल्कि अपने सबसे ईमानदार संवाद के दौर में है।

करीब से जानने पर यह और स्पष्ट हुआ कि श्याम बेनेगल के लिए सिनेमा कभी भी केवल पेशा नहीं रहा। वह उनके जीवन की बुनियादी भाषा थी, दुनिया को समझने और समझाने का जरुरी माध्यम । बीमारी के बावजूद उनकी स्मृति उतनी ही सजग थी, संदर्भ उतने ही सटीक और दृष्टि उतनी ही व्यापक। वे बीते समय को नोस्टेलजिकली नहीं देखते थे, बल्कि वर्तमान से जोड़कर परखते थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे जानबूझकर हर बात को दर्ज करा देना चाहते हों, इस उम्मीद में कि सिनेमा आने वाले समय में भी समाज से संवाद करता रहे।

उस बातचीत में कोई जल्दबाज़ी नहीं थी। करीब 90 मिनट में आपने न अपने काम का बखान, न उपलब्धियों का प्रदर्शन किया था। वे बहुत साधारण ढंग से कह रहे थे 'कोई भी व्यक्ति कुछ भी करे, उसमें मूल्य तो होंगे ही।' यह वाक्य एक सामान्य टिप्पणी की तरह आया, लेकिन उसमें उनका पूरा सिनेमा समाया हुआ था। वे मानते थे कि सवाल यह नहीं है कि फ़िल्म में मूल्य हैं या नहीं, सवाल यह है कि फ़िल्मकार उन्हें पहचानता है या उनसे मुँह मोड़ लेता है। सिनेमा, उनके लिए, इसी चुनाव का नाम था।

श्याम बेनेगल से बात करते हुए यह भी समझ में आता था कि वे सिनेमा को किसी ऊँचे आसन पर बैठकर नहीं देखते थे। वे उसे समाज के बीच खड़े होकर समझते थे उस समाज के साथ, जो लगातार बदल रहा है, संघर्ष कर रहा है, और कभी-कभी अपने ही मूल्यों से भटक भी जाता है। शायद यही कारण था कि उनकी फ़िल्में कभी 'ट्रेंड' के पीछे नहीं भागीं, बल्कि समय के भीतर टिककर खड़ी रहीं।

उनके सिनेमा में जो ठहराव दिखाई देता है, वह दरअसल जीवन को ध्यान से देखने की आदत से आता है। उन्होंने कभी दर्शक को बाँधने की कोशिश नहीं की, बल्कि उसे सोचने का अवसर दिया। यही वजह है कि उनसे हुई बातचीत भी किसी इंटरव्यू की तरह नहीं लगी, वह एक साझा चिंतन की प्रक्रिया थी। ऐसा लगा जैसे वे अपने अनुभव, अपनी चिंताएँ और अपने विश्वास अगली पीढ़ी को सौंप रहे हों।

श्याम बेनेगल के लिए फ़िल्म बनाना अपने जीवन-मूल्यों को सार्वजनिक करने का साहसिक काम था। हर फ़िल्म के पीछे कोई 'वजह' होती है और वह वजह फ़िल्मकार के भीतर से आती है उस समाज से, जिसे उसने देखा, जिया और महसूस किया है।

श्याम बेनेगल फ़िल्म निर्माण को कभी हल्के में नहीं लेते थे। उनके लिए यह एक गंभीर क्राफ़्ट था, सीखने, समझने और लगातार अभ्यास की माँग करने वाला। वे अक्सर कहते थे कि सिनेमा की भाषा और व्याकरण को समझे बिना फ़िल्म बनाना वैसा ही है जैसे भाषा जाने बिना कविता लिखने की कोशिश करना।

उनकी बातों में सिनेमा का इतिहास भी स्वाभाविक रूप से आ जाता था। मूक फ़िल्मों का ज़िक्र करते हुए वे उन्होंने बताया कि कि कैसे दर्शक बिना संवाद के केवल दृश्य देखकर कहानी समझ लेते थे। फिर जब सिनेमा में आवाज़ आई, तो यह सिर्फ़ तकनीकी बदलाव नहीं था यह अभिव्यक्ति की दुनिया का विस्तार था। लेकिन वे साथ ही यह चेतावनी भी देते थे कि आवाज़ की ताक़त तभी सार्थक है, जब उसका इस्तेमाल संवेदना के साथ किया जाए।

इसी बातचीत में उन्होंने खिड़की के बाहर की व्यस्त सड़क का उदाहरण दिया, गाड़ियों का शोर, लगातार भागती ज़िंदगी। वे मुस्कराकर कहते थे कि एक फ़िल्मकार इसी शोर से या तो अराजकता रच सकता है, या फिर अर्थ। यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसका रचनात्मक मन क्या चुनता है। यहीं से सिनेमा तकनीक से आगे बढ़कर अनुभव बनता है।

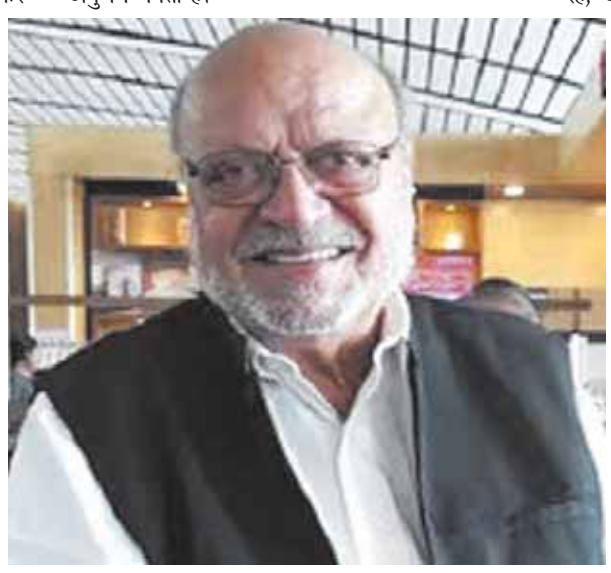

आज़ादी के पहले और बाद के सिनेमा पर बात करते हुए श्याम बेनेगल किसी एक फ़ैसले पर नहीं पहुँचते थे। वे मानते थे कि तकनीक का विस्तार एक बड़ा कारण था, लेकिन उससे भी बड़ा कारण था समाज की बदलती चेतना। मूक और बोलती फ़िल्मों के बीच का अंतर केवल संवाद का नहीं था, वह दृष्टि का भी था।

उनके अनुसार, कुछ फ़िल्मकारों ने नई तकनीक को समाज से जुड़ने का माध्यम बनाया, तो कुछ ने उसे केवल प्रयोग का औज़ार। वे साफ़ कहते थे कि फ़िल्म सिर्फ़ कहानी नहीं कहती उसमें दृश्य, ध्वनि, मौन, सब कुछ शामिल होता है। एक फ़िल्म तब असर छोड़ती है, जब ये सभी तत्व मिलकर दर्शक से संवाद करते हैं।

जब बात सामाजिक सजगता की आती थी, तो सत्यजीत रे का नाम अपने-आप आ जाता था। पाथेर पांचाली उनके लिए केवल एक महान फ़िल्म नहीं थी, बल्कि सिनेमा को समझने की पाठशाला थी। वे बताते थे कि कैसे रे साहब फ़िल्म की रिकॉर्डिंग के लिए गाँवों में रहे, असली ध्वनियाँ रिकॉर्ड कीं, ताकि पर्दे पर दिखने वाला संसार नक़ली न लगे।

एक दृश्य का ज़िक्र करते हुए उन्होंने बताया कि बूढ़ी औरत के गिरने की आवाज़ के लिए नारियल का इस्तेमाल किया गया। यह उदाहरण वे तकनीक दिखाने के लिए नहीं, बल्कि यह समझाने के लिए देते थे कि सिनेमा में संवेदना कैसे पैदा की जाती है। उनके अनुसार, जब दर्शक उस दर्द को महसूस करता है, तभी फ़िल्म सफल होती है।

श्याम बेनेगल के सिनेमा को संविधान से अलग करके नहीं देखा जा सकता। वे मानते थे कि भारत को समझने के लिए गांधी, नेहरू और अंबेडकर तीनों को साथ पढ़ना ज़रूरी है। उनके अनुसार, गांधी नैतिक चेतना के प्रतिनिधि थे, नेहरू आधुनिक राज्य के और अंबेडकर संवैधानिक न्याय के।

वे बड़े विस्तार से बताते थे कि कैसे बी.एन. राव ने दुनिया भर के संविधानों का अध्ययन किया और भारतीय संदर्भ में उन्हें ढाला। जिस देश में हर कुछ किलोमीटर पर भाषा और संस्कृति बदल जाती हो, वहाँ एक साझा संविधान बनाना असाधारण कार्य था। इसी समझ ने उन्हें संविधान सीरीज़ बनाने के लिए प्रेरित किया–ताकि आम लोग जान सकें कि यह दस्तावेज़ केवल अदालतों तक सीमित नहीं है, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ा हुआ है।

उनका मानना था कि एक फ़िल्मकार को सही और ग़लत के बीच का फ़र्क़ समझना ही होगा। औरत को अपमानित करने वाली फ़िल्मों पर उनकी राय बेहद स्पष्ट थी, ऐसी फ़िल्में भले ही मनोरंजन कर दें, लेकिन समाज को कुछ बेहतर नहीं दे सकतीं। निशांत जैसी फ़िल्मों में उन्होंने स्त्री के सवाल को सत्ता और हिंसा के संदर्भ में रखा।

मंथन के समय सेंसर बोर्ड से उनका संघर्ष केवल एक फ़िल्म की लड़ाई नहीं थी। वह इस बात का प्रतीक था कि रचनात्मक स्वतंत्रता और संस्थागत जड़ता के बीच टकराव कितना पुराना है। दिल्ली जाकर इंदिरा गांधी से मिलना, अपनी बात रखना यह सब उनके आत्मविश्वास और नैतिक साहस को दिखाता है। उनका मानना था कि सेंसर बोर्ड अगर प्रमाणन संस्था की तरह काम करे, तो ठीक है, लेकिन जब वह नैतिकता तय करने लगे, तो लोकतंत्र को नुकसान पहुँचता है।

बाद के वर्षों में वे फ़िल्में कम देखते थे, लेकिन उनका आकलन तीखा था। वे कहते थे कि फ़ॉर्म्युला और संवादबाज़ी ने सिनेमा को सतही बना दिया है। ओटीटी को लेकर वे यथार्थवादी थे, व्यवसाय आएगा तो दबाव भी आएगा। लेकिन वे यह भी कहते थे कि अगर निर्माता अपने मूल्यों पर अडिग रहे, तो हर दौर में सार्थक सिनेमा संभव है।

श्याम बेनेगल का सिनेमा हमें यह सिखाता है कि लोकतंत्र केवल संसद में नहीं, बल्कि परदे पर भी जीता है। उनकी फ़िल्में आज भी हमें सोचने पर मजबूर करती हैं, अपने समाज, अपने मूल्य और अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में। उन्हें याद करते हुए यही कहा जा सकता है कि उन्होंने सिनेमा को शोर से बचाया और अर्थ से जोड़ा। और शायद यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है।

उनकी फ़िल्मों में संविधान कभी किताब बनकर नहीं आता, वह रिश्तों, संघर्षों, अन्याय और उम्मीद के बीच सांस लेता हुआ दिखाई देता है। बराबरी, न्याय, गरिमा और संवेदना, ये उनके लिए सैद्धांतिक शब्द नहीं थे, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन के अनुभव थे, जिन्हें वे परदे पर उतारते थे। उन्होंने यह साबित किया कि सिनेमा लोकतंत्र का शोर नहीं, उसकी आत्मा हो सकता है। आज जब हम उन्हें याद करते हैं, तो दरअसल उस विश्वास को याद करते हैं कि फ़िल्म समाज को बेहतर देखने की दृष्टि दे सकती है। श्याम बाबू चले गए, लेकिन उनके सिनेमा में संविधान आज भी जीवित है चुपचाप, दृढ़ता से, और पूरे मानवीय सम्मान के साथ।

विचार

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

मनुष्यों और मनुष्येतर दुनिया की प्रकृति और जीवन प्रवाह

आज की आधुनिक दुनिया में मनुष्य समाज आपसी मत मतान्तर और चीख पुकार,हो हल्ले की अति से अत्यधिक परेशान नजर आता है। इसी वजह से मनुष्य में शांति की तलाश जैसी नयी अभिव्यक्ति को विस्तार मिला। एक मनुष्य दूसरे से विपरीत मत व्यक्त करता है तो दोनों मनुष्य विचलित और उत्तेजित हो अशांत हो जाते हैं। मैं जैसा सोचता हूं वैसा दूसरे क्यों नहीं सोचते? मैं जो कहता हूं उसे दूसरे ज्यों का त्यों क्यों नहीं सोचते इसी को लेकर मनुष्य अपने आप में अशांत और उत्तेजित बना रहता है। मनुष्य के मन में अंतहीन वैचारिक हलचलें निरंतर चलती ही रहती हैं। इसी से मनुष्य की विचार जन्य भूख चौबीस घंटे बारह महीने चलती ही रहती है। इन हलचलों की पराकाष्ठा यह है कि इस कारण मनुष्य ठीक से सो भी नहीं पाता है। सोता है तब भी शांति नहीं तरह तरह के सपनों की हलचल चलती ही रहती है।

हमारी आज की दुनिया में मनुष्य और मनुष्येतर जीवन की प्रकृति और प्रवृत्तियां एक दम भिन्न है। मनुष्य की हलचलें बुद्धि केन्द्रीत ज्यादा है तो मनुष्येतर हलचलें ज्यादातर भोजन केन्द्रित मुख्यतः भूख और भक्षण को लेकर ही होती है। मनुष्येतर जीवन के पास ध्वनि तो है पर मनुष्य जैसी भाषा संवाद कला या पद्धति विकसित नहीं हुई है। अतः मनुष्येतर जीवन में मत मतान्तर और वाद विवाद अनुपस्थित है। आज की आधुनिक दुनिया में मनुष्य समाज आपसी मत मतान्तर और चीख पुकार,हो हल्ले की अति से अत्यधिक परेशान नजर आता है।इसी वजह से मनुष्य में शांति की तलाश जैसी नयी अभिव्यक्ति को विस्तार मिला। एक मनुष्य दूसरे से विपरीत मत व्यक्त करता है तो दोनों मनुष्य विचलित और उत्तेजित हो अशांत हो जाते हैं। मैं जैसा सोचता हूं वैसा दूसरे क्यों नहीं सोचते? मैं जो कहता हूं उसे दूसरे ज्यों का त्यों क्यों नहीं सोचते इसी को लेकर मनुष्य अपने आप में अशांत और उत्तेजित बना रहता है। मनुष्य के मन में अंतहीन वैचारिक हलचलें निरंतर चलती ही रहती है। इसी से मनुष्य की विचार जन्य भूख चौबीस घंटे बारह महीने चलती ही रहती है।इन हलचलों की पराकाष्ठा यह है कि इस कारण मनुष्य ठीक से सो भी नहीं पाता है। सोता है तब भी शांति नहीं तरह तरह के सपनों की हलचल चलती ही रहती है।

मनुष्येतर जीवन मनुष्य की अपेक्षा शांत स्वरूप के जीवन व्यतीत कर रहा है। मनुष्येतर जीवन अधिक विविधताओं वाला न हो कर भोजन जुटाना और अपने इर्द-गिर्द चहल-पहल तक ही सीमित है। मनुष्येतर जीवन में वे सारी चुनौती उभरी ही नहीं जो इस दुनिया में मनुष्यों के जीवन में उभरी है। मनुष्य जीवन में नित नई चुनौतियां खड़ी होती ही रहती है और उनके नित नए हल या समाधान भी मनुष्य व्यक्तिशः या हिल मिल कर निकालने की जुगत में लगा रहता है। इसीलिए मनुष्य के जीवन में समाधान और धमासान की जुगलबंदी चलती ही रहती है।

मनुष्य जीवन थलचर यानी जमीन पर ही मुख्यतः विस्तार करता है। पर मनुष्य ने अपनी बुद्धि के बल पर नभ और जल में भी अपने जतन से जीवन की हलचलों का उल्लेखनीय विस्तार कर लिया है। मनुष्य जीवन को तकनीक ने जल,नभ और थल पर निरन्तर अपनी हलचलों को करने की शक्ति प्रदान करने का पराक्रम कर डाला है।

इसके उलट जलचर जीव जल तक ही जीवन भर सीमित है और नभचर जीव रहते तो धरती पर है पर नभ में भ्रमण की क्षमता रखते हैं। जलचर की कुछ प्रजातियां जमीन पर भी रह लेती है जैसे मेंढक, कछुआ आदि। ऐसे जीव उभयचर कहलाते हैं।

मनुष्य जगत और जीव जगत दोनों चेतन होने के बाद भी मनुष्य जगत अपनी जीवन शैली से प्रदूषण कारी घटको को अपनी जीवन शैली के उप उत्पाद के रूप में बड़े पैमाने पर और निरन्तर धरती पर छोड़ दिया करते है। इस निरंतर जारी प्रक्रिया के फलस्वरुप धरती का जल,थल और नभ प्रदूषित होता रहता है। जहां सघनता से मनुष्य बसाहट वहां सर्वाधिक प्रदूषण की सधनता बढ़ती ही जाती है। मनुष्य जगत अपनी जीवन शैली कुछ इस तरह की बनाता जा रहा है कि दुनिया भर में मानव बसाहट की सधनता बढ़ती ही जा रही है। मनुष्य के पास तन मन की ताकत से जो जीवन जीने का प्राकृतिक रास्ता था उसे विकसित जीवन शैली के नाम पर अधिकांश मनुष्य त्याग रहे हैं। जिसका सीधा असर यह हुआ है कि अधिकांश मनुष्य कृत्रिम साधनों से जीवन जीने के आदि हो चुके हैं। इस कारण मनुष्येतर जीवन क्रम के सामने भी दिन प्रतिदिन जीवन जीने का संकट बढ़ता ही जा रहा है। दुनिया भर में आटोमोबाइल संसाधनों का अतिशय विस्तार होने से सड़क दुघर्टना में होने वाली मानवीय मौत की दिन-प्रतिदिन बढ़ती संख्या के अलावा सड़कों पर दौड़ती आटोमोबाइल संसाधनो का अंतहीन सिलसिला असंख्य मनुष्येतर जीवों को असमय मृत्यु के मुंह में धकेल रहा है। मनुष्य का जीवन खुद तो संकटग्रस्त होता जा रहा है साथ ही मनुष्येतर जीवन को भी दिन-प्रतिदिन नित नए संकटों में डाल रहा है। मनुष्य जब तक यह नहीं समझेगा कि सारे समस्याओं की जड़ उसकी जीवनशैली में छिपी है और समस्याओं का निदान भी मनुष्येतर जीवों की तरह प्राकृतिक जीवन शैली में ही है दूसरा कोई रास्ता है ही नहीं।

डॉ. रवीन्द्र अरजरिया

प्राकृतिक प्रकोप के मुहाने पर खड़ा संसार

देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप व्यवस्थाओं को बदलना नितांत आवश्यक होता है। इसी आवश्यकता के आधार पर अविष्कारों को नई उड़ानें दी जा रहीं हैं। नवीन शोधों के नाम पर शासकीय संरक्षण, निजी सुविधायें और संसाधनों का अम्बार लगा दिया जाता है। विभिन्न क्षेत्र के नये उपकरणों को दूरगामी सोच के बिना ही भडकीले विज्ञापनों से आकर्षित होकर स्वीकारा जा रहा है, भले ही वह जीव और प्रकृति के विपरीत ही क्यों न हो। आधुनिक मोबाइल ने फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, आडियो रिकार्डिंग, पत्राचार, वीडियो कालिंग, कान्फ्रेंसिंग, टाइपिंग, एडीटिंग जैसे सैकडों रोजगारों को समाप्त कर दिया है। कम्प्यूटर ने टाइपिंग, डिजाइनिंग सहित हजारों कामगारों को बेरोजगारों की लाइन में खडा कर दिया है। भूसा न निकालने के कारण हार्वेस्टर पर पशुओं की हत्या, पराली जलाने से उठने वाले प्रदूषण और फसल काटने वाले मजदूरों के मुंह से निवाला छीनने जैसे आरोप लग रहे हैं। बोरिंग मशीनों ने हजारों फुट गहराई से पानी निकालकर भूगर्भीय परतों का संतुलन बिगाड दिया है। सेटलाइट के माध्यम से अफवाहों को हवा देकर दंगे करने वालों के षड्यंत्र सात समुन्दर पार तक दस्तक देने लगे हैं। वातानुकूलित यंत्रों से तापमान में वृद्धि सहित दर्जनों कुप्रभाव सामने आ रहे हैं। साइबर से लेकर तरंग आधारित उपकरणों से उत्पन्न होने वाला रेडिएशन जानलेवा साबित हो रहा है। बीमारियों के निदान हेतु दी जाने वाली एलोपैथिक दवाओं का प्रतिकूल प्रभाव अनेक रोगों का जन्मदाता बना बैठा है। नई पीढी को आश्रित बनाकर गुलामी का पट्टा पहनाने वाले षडयंत्रकारियों की जमातें नित नये उपकरणों के साथ मैदान में कूद रहे हैं। वर्तमान में बिना कैल्कुलेटर के हिसाब लगाने, बिना वाहन के दुकान तक जाने, बिना मोबाइल के अधूरा महसूस करने, बिना एसी के कमरे में काम करने, बिना मिक्सी के मसाले पीसने, बिना गैस के भोजन पकाने, बिना मशीन के कपडे धोने जैसे रोजमर्रा के सभी जरूरी काम करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। अविष्कारों को सकारात्मक दिशा में उपयोगी बनाने की आवश्यकता है जबकि उनको नकारात्मकता से साथ परोसा जा रहा है। वहीं देश में जरूरतमंदों की सहायता हेतु प्रारम्भ हुई योजनायें अब जबरन वसूलने का अधिकार बन गई हैं। मुफ्तखोरी के इस फैशन में कामचोरी की आदत सुरसा की तरह बढती ही है। इसके लिए नागरिकों का एक बडा समूह विधायिका से जुडे राजनैतिक दलों की सत्ता लोलुपता यानी वोटबैंक की बढोत्तरी, कार्यपालिका से जुडे अधिकांश उत्तरदायी लोगों की स्वार्थपरिता यानी अतिरिक्त लाभ कमाने और न्यायपालिका के विवादास्पद रहे निर्णयों को उत्तरदायी मानता है। प्रकृति का क्रूरता से दोहन, मानवता का निष्ठुरता से शोषण और वर्चस्व की बढती जंग में आतंक का ठहाका निरंतर तेज होता जा रहा है। ऐसे में संकेतों की बानगी रह-रहकर मिल रही है परन्तु आंख के अंधे का नाम नयनसुख रखने वालों की कमी नहीं है। यांत्रिकीय वर्षा, यांत्रिकीय ठंडक, यांत्रिकीय गर्मी पैदा करने वाले स्वयं को पराशक्ति मान बैठे हैं। ऐसे में तुर्किये के कोन्या मैदान ने एक बार फिर संसार को आइना दिखा दिया है। वहां के लगभग 2.6 मिलियन हेक्टेयर कृषि क्षेत्र में 100 फुट से अधिक चौडे करीब 684 गड्ढे बन गये हैं जिसके लिए भूर्गभीय जल के मनमाने उपयोग को उत्तरदायी ठहराया जा रहा है। केवल लाल सागर में ही हजारों सकिंग होलों की जानकारी मिली है। आसमान में तो ओजोन की परत में छेद होने के प्रमाण बहुत पहले ही मिल चुके थे। देश के अन्दरूनी हालात तो बद से बदतर होते जा रहे हैं। पहाडों पर विकास ने नाम पर हो रहे मनमाने कार्यों से भूस्खलन, हिमस्खलन और आपदाओं के नये अध्याय लिखे जा रहे हैं। प्रकृति के संतुलन केन्द्रों को पर्यटन स्थलों के रूप में परिवर्तित करने की होड लगी है। महानगरों में जलापूर्ति के लिए सैकडों मील दूर के स्रोतों को तलाशा जा रहा है। नदियों की धारायें निरंतर पतली होती जा रहीं हैं। हिमशिखर निरंतर दूर होते जा रहे हैं। मकानों से अधिक वाहनों की भीड बढ रही है। पर्यावरणीय असंतुलन से स्वनिर्मित रोगजनित कीटाणु आकार ले रहे हैं। वहीं दुनिया के स्वयंभू ठेकेदार अपनी दादागिरी को कायम रखने हेतु निरंतर परमाणु विस्फोट करने में लगे हैं ताकि उन्नत किस्म के हथियार तैयार करके लाचार देशों को भयाक्रान्त कर गुलाम बनाया जा सके। इन विस्फोटों से उत्पन्न होने वाली तरंगों का विश्व व्यापी घातक प्रभाव निरंतर सामने आ रहा है। वर्चस्व की जंग में आग्नेय शस्त्रों के अनियंत्रित प्रयोग, पर्यावरण प्रदूषण की कीमत पर विलासता के उपकरणों का उपयोग और शारीरिक सुख की मृगमारीचिका के पीछे दौडते लोगों के जीव-प्रकृति विरोधी कृत्य ही वर्तमान समस्याओं और उनके विकराल होते स्वरूप के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसे में जनसंख्या की विस्फोटक होती स्थिति, हरामखोरी की आदत, अकर्मण्य होती काया, नकारात्मकता का साम्राज्य और कट्टरता की जहरीली मानसिकता ने समूचे संसार को ही प्राकृतिक प्रकोप और मानवीय संघर्ष के मुहाने पर खडा कर दिया है। हालत यह हैं कि संसार में शान्ति कायम करने वाली उत्तरदायी संस्थायें अब स्वयं स्वार्थ के दलदल में डूबी नजर आ रहीं हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे संस्थानों के चेहरों से तो कोरोना काल में भी नकाब उतर चुका था। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे मंच अब अप्रासांगिक हो चुके हैं। हकीकत तो यह है कि आज चारों ओर लाठी और बैल की कहावत चरितार्थ हो रही हैं। शक्ति का परचम फहराने के लिए नीतियां, रीतियां या सिद्धान्तों की कसौटी को कैद करके आतंक, भय और षडयंत्र ने संसार भर में अपने पैर फैलाने शुरू कर दिये हैं। इन परिस्थितियों को नियंत्रित करने हेतु केवल आम आवाम की वैचारिक सकारत्मकता ही एकमात्र विकल्प है। एकल नागरिक की निजी पहल ही सामाजिक पहल, क्षेत्रीय पहल, प्रादेशिक पहल, राष्ट्रीय पहल और फिर अन्तर्राष्ट्रीय पहल में परिवर्तित हो सकती है। इस बार बस इतना ही। अगले सप्ताह एक नई आहट के साथ फिर मुलाकात होगी।

राजा भोज और कुशाभाऊ ठाकरे की ऐतिहासिक धरा के लिए उम्मीदों का मंगल

जेपी.नड्डा, मोहन यादव ने दी स्वर्णिम सौगातें

पीपीपी मॉडल से देश का पहला मेडिकल कॉलेज धार में

(राजेश शर्मा)

धार। 23 दिसम्बर की तिथि धार और मालवा अंचल के लिए ऐतिहासिक घड़ी थी । राजा भोज और कुशाभाऊ ठाकरे की ऐतिहासिक धरा के लिए मंगलवार मानों उम्मीदों का मंगल लेकर आया। उज्जैन महाकाल लोक की तर्ज़ पर धारेश्वर लोक,पीपीपी मॉडल से देश के पहले मेडिकल कॉलेज की सौगात धार को मिली। यह देश का पहला मेडिकल कॉलेज है जो नवाचार के रूप में धार जिले को मिला। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, केंद्रीय स्वास्थ एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी.नड्डा, मुख्यमंत्री मोहन यादव मानों मोहित थे इस ऐतिहासिक धरा पर उन्होंने ना केवल 626 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन कर भरपूर सौगाते दी बल्कि धार की माटी से अपना गहरा अनुराग भी दिखाया । धार जिले की धरा ने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष और अपने मुख्यमंत्री का ऐतिहासिक स्वागत कर दोनों नेताओं को आल्हादित कर दिया। आयोजन से उत्साहित सीएम मोहन यादव ने इस ऐतिहासिक नगरी के वैभव को रेखांकित करते हुए कहा कि विकास के नित नए आयाम स्थापित कर रहा धार जिला विकास के नये ताने-बाने बुनेगा । डॉ. मोहन यादव का अभ्युदय मध्यप्रदेश - विकास और सेवा के 2 वर्ष ' उम्मीद- बदलेगी अंचल की सूरत और सीरत '

- **मुख्यमंत्री यादव ने रिमोट का बटन दबाकर धार को दी 626 करोड़ रूपये की सौगात**
- **मेडिकल कालेज की स्थापना से मालवा की धरती धार जिले में आम लोगों को मिलेंगी बड़ी राहत : मोहन यादव**

''एक जिला-एक उत्पाद'' के तहत बाग प्रिंट से बने वस्त्र से किया पारंपरिक रूप से स्वागत – केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का सभा स्थल आगमन पर पारंपरिक ढोल मांदल व नृत्य के साथ स्वागत किया गया। मंच पर अतिथियों का स्वागत जिले के ''एक जिला-एक उत्पाद'' के तहत बाग प्रिंट से बने वस्त्र से किया।

देश का पहला मेडिकल कॉलेज है जो नवाचार के रूप में धार जिले को सौगात के रूप में मिल रहा है: जेपी नड्डा– जेपी नड्डा ने कहा कि धार जिले में पीपीपी मॉडल पर बन रहे मेडिकल कॉलेज में जन निजी सहभागिता में सहयोगी संस्था प्रमुख साधना कपूर को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने देश के पहले जन निजी सहभागिता महाविद्यालय बनाने में सहयोग दिया। यह देश का पहला मेडिकल कॉलेज है जो नवाचार के रूप में धार जिले को सौगात के रूप में मिल रहा है।

आज देश में 819 मेडिकल कॉलेज बन चुके है जिनमें धार के मेडिकल कॉलेज का पीपीपी मॉडल पर भूमिपूजन किया जा रहा है। इस क्षेत्र के ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाओं हेतु इंदौर या दूरस्थ शहरों में नहीं जाना पड़ेगा तथा यही के युवा एमबीबीएस कर इस क्षेत्र में अपना योगदान देगें। इस मेडिकल कॉलेज से यहां के लोगों को रोजगार भी उपलब्ध होगा। आज मध्य प्रदेश में मेडिकल कॉलेज की श्रृंखला बन गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा धार में पी एम मित्रा पार्क की सौगात से कपास को मुख्यधारा में लाए यह धार जिलेवासियों के लिए सौगात है। उन्हीं के नेतृत्व में देश की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की और अग्रसर है। आज वर्ल्ड बैंक ने भी माना है कि भारत की अर्थव्यवस्था नीति एक चमकती हुई आशा की किरण है।

धार के विकास को पंख लग गए हैं विकास करते-करते धार भी आगे बढ़ रहा है: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि अभी-अभी प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश का पहला पीएम मित्र पार्क की सौगात धार जिले को मिली है जिससे 3 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा, वहीं कपास उत्पादक किसानों को फायदा भी मिलेगा। जिले को पीएम मित्र पार्क और मेडिकल कॉलेज खुलने से यहाँ पर रोजगार एवं सुविधाए उपलब्ध होगी। धार के विकास को पंख लग गए हैं विकास करते-करते धार भी आगे बढ़ रहा है।

इनकी रही गरिमामय उपस्थिति..

इस अवसर पर केन्द्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास सावित्री ठाकुर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल, उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल, नगरीय विकास एवं संसदीय मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, केबिनेट मंत्री नागर सिंह चौहान, राज्य मंत्री लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग नरेंद्र शिवाजी पटेल, धार विधायक नीना विक्रम वर्मा, पूर्व मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव , जिला भाजपा अध्यक्ष निलेश भारती,पूर्व मंत्री रंजना बघेल, पूर्व सांसद छतरसिंह दरबार, पूर्व सांसद गजेंद्र सिंह राजूखेड़ी, विधायक धरमपुरी कालुसिंह ठाकुर, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी, सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण, पत्रकारगण व बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा और विधायक नीना वर्मा के प्रयासों को मिली सफलता

धारेश्वर मंदिर में धारेश्वर लोक का भूमिपूजन सहित 626 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन के रूप में ऐतिहासिक नगरी एवं अंचल को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा, सीएम डॉ. मोहन यादव ने धारेश्वर मंदिर में धारेश्वर लोक का भूमिपूजन, 15 करोड़ से गीता भवन, 10 करोड़ से माफीपुरा से आमल्या भेरू सड़क निर्माण, 40 करोड़ से तिरला में सी एम राइज स्कूल,धार में ला कॉलेज, धार तरणताल, 266 करोड़ की लागत से पी पी पी - पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप माडल से मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन सहित 626 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन की सौगात दी पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा और विधायक नीना वर्मा के अथक प्रयासों से धार को यह अनमोल सौगातें मिली है।

383 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का हुआ भूमिपूजन और लोकार्पण

मेडिकल कॉलेज से बदलेगी बैतूल की तस्वीर और तकदीर

एस. द्विवेदी

बैतूल। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा ने बैतूल में पीपीपी मोड पर बनने जा रहे मेडिकल कॉलेज के भूमिपूजन कार्यक्रम को जिले के लिए ऐतिहासिक क्षण बताया। उन्होंने बैतूलवासियों को बधाई देते हुए कहा कि यह मेडिकल कॉलेज जिले की तस्वीर और तकदीर दोनों बदलने वाला सिद्ध होगा। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा बैतूल जिले के पुलिस ग्राउंड में आयोजित मेडिका कॉलेज के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री श्री नड्डा और मुख्यमंत्री डॉ मोहन ने यहां पीपीपी मोड पर मेडिकल कॉलेज के शिलान्यास सहित 383 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। इस दौरान उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला, केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, प्रदेश अध्यक्ष भाजपा व बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भैंसदेही विधायक महेंद्र सिंह चौहान, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पवार, मैनेजिंग डायरेक्टर आरकेडीएफ सिद्धार्थ कपूर सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहें। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा ने कहा कि इस मेडिकल कॉलेज के माध्यम से आने वाले समय में गांव-गांव तक अच्छे डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। यहां पोस्ट ग्रेजुएट स्तर तक की चिकित्सा शिक्षा दी जाएगी, जिससे बैतूल को स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य केवल बीमारों का इलाज करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि लोग बीमार ही न पड़े, यही हमारी साधना है।

1 लाख 81 हजार आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के माध्यम से समुचित देखभाल

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में स्वास्थ्य सेवाओं के विकेंद्रीकरण पर गंभीरता से काम किया गया है। आज देशभर में 1 लाख 81 हजार आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के माध्यम से जच्चा-बच्चा की समुचित देखभाल की जा रही है। उन्होंने बताया कि कई गंभीर बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण पाया है। कुष्ठ रोग से देश को मुक्त किया जा चुका है, ट्रेकोमा अब गंभीर बीमारी नहीं रही और मीजल्स-रूबेला से भी देश को छुटकारा मिल चुका है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में अमूलचूल परिवर्तन किए हैं। देश में जन्म लेने वाले प्रत्येक बच्चे को 12 प्रकार के जीवन रक्षक टीकों के अंतर्गत 27 डोज लगाए जा रहे हैं।

भारत में मातृ मृत्यु दर में पिछले पांच वर्षों में उल्लेखनीय कमी

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि भारत में मातृ मृत्यु दर में पिछले पांच वर्षों में उल्लेखनीय कमी आई है और यह दर अब वैश्विक स्तर पर काफी बेहतर स्थिति में है। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के माध्यम से डायबिटीज, कैंसर और हाइपरटेंशन जैसी बीमारियों की रोकथाम के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि टेली-मानस सेवा के जरिए अब तक 30 लाख से अधिक लोगों को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श का लाभ मिला है। वहीं 40 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग कर उच्च रक्तचाप की जांच की है। इसके तहत 6 करोड़ 80 लाख लोगों को नियमित दवाएं दी जा रही हैं, जबकि 4 करोड़ 60 लाख डायबिटीज मरीजों का इलाज किया जा रहा है।

बदलता भारत में मेडिकल कॉलेजों की संख्या 821 पहुंची

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा ने बदलते भारत की तस्वीर पेश करते हुए कहा कि वर्ष 2014 में देश में केवल 387 मेडिकल कॉलेज थे, जो आज बढ़कर 819 हो गए हैं। धार और बैतूल में मेडिकल कॉलेज जुड़ने के बाद यह संख्या 821 हो जाएगी। उन्होंने बताया कि पहले देश में एमबीबीएस की सीटें 51 हजार थीं, जो अब बढ़कर 1 लाख 29 हजार हो चुकी हैं। वहीं पोस्ट ग्रेजुएट सीटें 31 हजार से बढ़कर 80 हजार हो गई हैं। उन्होंने ने बताया कि भारत सरकार ने 14 नए मेडिकल कॉलेजों को मंजूरी दी है। मध्य प्रदेश की बात करते हुए उन्होंने कहा कि पहले प्रदेश में सिर्फ 5 मेडिकल कॉलेज थे, जो आज बढ़कर 33 हो चुके हैं। आने वाले समय में मध्य प्रदेश में 50 से अधिक मेडिकल कॉलेज होंगे।

बैतूल जिले में बनेगा जनजातीय संग्रहालय

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार गरीब, महिला, किसान सहित सभी वर्गों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। आदिवासी अंचल के महान नायकों–रानी दुर्गावती, राजा भभूत सिंह, शंकर शाह, रघुनाथ शाह और बादल भोई–के सम्मान में संग्रहालय बनाए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारत न्यास एवं भारत सरकार के सहयोग से बैतूल जिले में भी जनजातीय संग्रहालय बनाने की घोषणा की गई। उन्होंने बताया कि वर्ष 2025 कपे उद्योग वर्ष घोषित किया गया है। इससे उद्योग-धंधों को नई गति मिली है और युवाओं, महिलाओं व किसानों के लिए रोजगार के अवसर सृजित हो रहे हैं।

जनकल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों को मिली अभूतपूर्व गति: मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि बैतूल जिले को मेडिकल कॉलेज के साथ आज कई महत्वपूर्ण सौगातें मिली हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान मध्यप्रदेश सरकार के दो वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और इस अवधि में जनकल्याणकारी योजनाओं को अभूतपूर्व गति मिली है। इसी क्रम में भोपाल और इंदौर–दोनों शहरों में मेट्रो ट्रेन का संचालन प्रारंभ होना राज्य के बदलते दौर का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना से उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश राज्य के किसानों को व्यापक लाभ मिलेगा। इस परियोजना से उद्योग-धंधों को बढ़ावा मिलेगा तथा बुंदेलखंड क्षेत्र में पेयजल की आपूर्ति सुदृढ़ होगी। उन्होंने कहा कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) नदी जोड़ परियोजना को प्रधानमंत्री की मौजूदगी में मंजूरी दी गई है। वहीं, ताप्ती नदी से जुड़ा महाराष्ट्र राज्य के साथ लगभग 70 हजार करोड़ रुपये की बड़ी योजना किसानों के हित में तैयार की गई है।

श्री राजेन्द्र सूरि शास. महा. सरदारपुर राजगढ़ में स्वरोजगार हेतु नि:शुल्क प्रशिक्षण आयोजित

धार। राजेन्द्र सूरि शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर राजगढ़ में जनजातीय कौशल केंद्र धार कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय एवं जनजातीय कार्य मंत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में श्री राजेंद्र सूरि शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर राजगढ़ जिला धार में 60 दिवसीय स्वरोजगार हेतु विविध प्रकार के निशुल्क प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के सहयोग से किया जा रहा है।

इसमें आचार एवं पापड़ निर्माण, असिस्टेंट जूट क्राफ्ट प्रोडक्ट मेकर, असिस्टेंट कंप्यूटर हार्डवेयर ऑपरेटर आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि धर्मेंद्र मंडलोई अध्यक्ष जन भागीदारी समिति तथा विशेष

अतिथि जनजातीय कौशल केंद्र धार के निर्देशक सुनील गार्गव तथा जनभागीदारी समिति सदस्य ज्ञानेंद्र मूणत, नवीन बानिया, आशीष जैन, तथा गिरधारी चौधरी मंचासीन थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती एवं परम् पूज्य आचार्य भगवंत श्री राजेंद्र सूरि जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित किया। अतिथियों का स्वागत महाविद्यालय परिवार एवं कौशल विकास केन्द्र धार के अधिकारियों द्वारा किया। गिरधारी चौधरी ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। आशीष जैन द्वारा विद्यार्थियों को विशेष रूप से छात्राओं को ब्यूटी पार्लर के प्रशिक्षण के लिए प्रेरित किया । नवीन बानिया ने विद्यार्थियों को देश के विकास में योगदान देने के लिए स्वरोजगार पर बल दिया। प्रो आर के जैन भी अपने विचार व्यक्त किये। सुनील गार्गव ने कौशल विकास केन्द्र एवं निशुल्क प्रशिक्षण की जानकारी दी। धर्मेंद्र मंडलोई ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के लिए प्रेरित किया तथा बताया कि प्रशिक्षण प्राप्त कर आप अपना स्व रोजगार स्थापित कर सकते हैं तथा देश के विकास में योगदान दे सकते हैं। प्रशिक्षक साबिर पठान, मेडम शाहिन अली तथा मोहिनी भूरिया का महाविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया गया । प्राचार्य प्रो.एल एस अलावा ने सभी का स्वागत कर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया । कार्यक्रम का संचालन अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक प्रो.सरिता जैन ने किया। आभार डॉ राकेश शिंदे ने व्यक्त किया । कार्यक्रम में सतीशचन्द्र गुप्ता कार्यालय प्रमुख जन शिक्षण संस्थान धार, राहुल सिंदल सह कार्यक्रम अधिकारी आदिवासी कौशल विकास केन्द्र धार, रीना डाबर आदिवासी कौशल विकास केन्द्र धार,शुभम जोक्सन ,प्रो.प्रियंका चंगोड,डा मोहित सिंह चौहान , डॉ रीना खाण्डेकर, खुशी गेहलोत ,कमलेश चौहान, योगेश सांखला,अजय राठौर तथा महाविद्यालय के छात्र-छात्राए उपस्थित थे।

दोगुने दाम पर खाद खरीदने को मजबूर किसान

किसानों ने जांच कर कार्यवाही किये जाने की मांग की

भौंरा। ग्राम सातलदेही में किसानों को प्रिंट रेट से अधिक कीमत पर यूरिया खाद बेचे जाने का मामला सामने आया है। आरोप है कि सातलदेही में लायसेंसधारी खाद डीलर द्वारा सरकारी दर 267 प्रति बोरी में मिलने वाली यूरिया 500 रूपये प्रति बोरी के हिसाब से बेची जा रही है। हैरानी की बात यह है कि यह काम कोई अवैध कारोबारी नहीं, बल्कि स्वयं लाइसेंसधारी खाद डीलर कर रहा है, वह भी अपने निजी निवास से। जिसकी ग्रामीणों ने शिकायतें भी की। इस मामले को लेकर जब पत्रकार ग्राहक बनकर डीलर के घर पहुंचे, उस समय वह मौजूद नहीं था, लेकिन उसके परिवारजन ने साफ तौर पर यूरिया की कीमत 500 बताई। नकद भुगतान पर बोरी देने की सहमति बनी और घर के पीछे बने गोदाम से खाद उठाने को कहा गया। अंदर जाकर देखा तो वहां लगभग 90 से 125 बोरी यूरिया का बड़ा स्टॉक रखा हुआ था। यह न तो आकस्मिक स्थिति थी और न ही घरेलू जरूरत, बल्कि सुनियोजित व्यावसायिक बिक्री का साफ संकेत था। ग्रामीणों का आरोप है कि डीलर हमेशा से ही महंगे दामों पर यूरिया बेचता रहा है और किसान मजबूरी में उसकी शर्तों पर खाद खरीदने को

विवश रहे हैं। अब मांग उठ रही है कि डीलर के पास अब तक जितना भी स्टॉक आया है, उसका पूरा मिलान किया जाए और यह जांच की जाए कि पहले किन-किन किसानों को, किस तारीख और किस दर पर यूरिया बेची गई। किसानों के कार्ड, बिक्री रजिस्टर और स्टॉक रजिस्टर की गहन जांच कर यह स्पष्ट किया जाए कि कितनी बार और कितनी मात्रा में नियमों की अनदेखी की गई।

ओवर रेट पर बेची जा रही खाद, कार्रवाही नहीं– उर्वरक नियंत्रण आदेश (एफ़सीओ) इस मामले में पूरी तरह स्पष्ट है। लाइसेंसधारी डीलर को निर्धारित एमआरपी से अधिक कीमत पर बिक्री की अनुमति नहीं है, न ही निजी घर या अनधिकृत स्थान से खाद बेची जा सकती है। नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर स्टॉक जब्ती, लाइसेंस निलंबन या निरस्तीकरण और आपराधिक प्रकरण दर्ज करने का प्रावधान है। बावजूद इसके, इतने बड़े स्टॉक और खुलेआम ओवररेट बिक्री के बाद भी स्थानीय स्तर पर कोई त्वरित कार्रवाई न होना कई सवाल खड़े करता है।

सिर्फ कागजों में सस्ती खाद उपलब्ध कराने के दावे

किसानों को सस्ती और समय पर खाद उपलब्ध कराने को लेकर सरकार दावे करती है, लेकिन यह दावे जमीनी स्तर पर पूरी तरह विफल नजर आ रहे है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान स्वयं यह कह चुके हैं कि यूरिया की ओवररेट बिक्री किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी और दोषियों पर कठोर कार्रवाई होगी। इसके बावजूद जमीनी हकीकत यह है कि कृषि विभाग की भूमिका इस पूरे मामले में मौन दर्शक जैसी नजर आ रही है। सवाल यह है कि क्या विभागीय निगरानी केवल कागजों तक सीमित रह गई है, या फिर शिकायतों के बावजूद आंखें मूंद लेना ही अब व्यवस्था का हिस्सा बन चुका है?

मौजूदा स्टॉक की जांच कर कार्यवाही करने की मांग

ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि न केवल मौजूदा स्टॉक को तत्काल जब्त किया जाए, बल्कि पूर्व में हुई सभी बिक्री की भी जांच कराई जाए। एमआरपी से अधिक दर पर यूरिया बेचने के मामले में एफआईआर दर्ज की जाए। साथ ही जिलेभर में खाद विक्रेताओं की विशेष जांच कर किसानों के हितों की रक्षा सुनिश्चित की जाए। यह मामला केवल एक डीलर की मनमानी तक सीमित नहीं, बल्कि उस व्यवस्था पर सवाल है, जिसकी निष्क्रियता के चलते किसान महंगी खाद खरीदने को मजबूर हैं। देखना यह है कि प्रशासन इस खुलासे को गंभीरता से लेकर कार्रवाई करता है या फिर यह मामला भी फाइलों में दबकर किसानों की उम्मीदों की तरह दम तोड़ देता है।

इनका कहना है –

जो दूसरी दुकानों में यूरिया के रेट हैं, वही हमारे यहां है।

– सुरेश यादव, दुकानदार

हम अधिकारियों को भेजकर जांच कराएंगे। अगर ओवर रेट का मामला सामने आता है तो नियमानुसार कार्रवाई की जायेगी।

–डॉ. आनंद बडोनिया, डीडीए, बैतूल

डबरा में रेत माफियाओं की गैंगवार का वीडियो वायरल

फरियादी भी निकला फायरिंग में शामिल; डायल-112 वाहन पर हमला

डबरा। पिछोर थाना क्षेत्र में हाल ही में हुई गोलीबारी की सनसनीखेज घटना में बड़ा खुलासा सामने आया है। इस मामले में फरियादी हरेंद्र राणा का कट्टा लहराते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसने पूरे घटनाक्रम की दिशा ही बदल दी है।

जानकारी के अनुसार, पिछोर कस्बे में रेत कारोबार से जुड़े दो गुटों के बीच वर्चस्व को लेकर पहले गाली-गलौज और आपसी विवाद हुआ, जो बाद में मारपीट और फायरिंग तक पहुंच गया। वायरल वीडियो सामने आने के बाद

पुलिस जांच में यह तथ्य उजागर हुआ कि दोनों गुट पहले एक साथ रहकर रेत का कारोबार कर रहे थे, लेकिन कुछ समय पहले अलग होकर नई-नई कंपनियों के जरिए काम शुरू कर दिया था। इसी बंटवारे के बाद से क्षेत्र में वर्चस्व की लड़ाई तेज हो गई। पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि फायरिंग की घटना में घायल हुए हरेंद्र राणा और उसकी टीम के सदस्य मनजीत रंधावा केवल पीड़ित नहीं थे, बल्कि हरेंद्र राणा स्वयं भी अवैध हथियारों के साथ मौके पर मौजूद था। जांच में पाया गया कि उसके पास एक नहीं बल्कि दो अवैध हथियार थे और उसने भी फायर किए, जिससे विवाद और अधिक भड़क गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ क्रॉस केस दर्ज किया है। इसके साथ ही घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची डायल-112 की एफआरवी पुलिस टीम के साथ भी रेत कारोबारियों ने अभद्रता की।

कलेक्टर सोनिया मीना की अभिनव पहल 'मिशन परिवर्तन -100'

4700 संस्थाओं के लिए परिवर्तक के रूप में संभाली 100 अधिकारियों ने कमान

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार जिले की समस्त शासकीय शालाओं, आंगनवाड़ी केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों तथा छात्रावासों का अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से स्थल भ्रमण कर निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान इन संस्थानों में विद्यमान समस्याओं एवं अनियमितताओं की पहचान कर उनके सुधार हेतु संबंधित विभागीय जिला अधिकारियों को सूचित किया जा रहा है, जिससे व्यवस्थाओं में सुधार की दिशा में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित हो रही है। निरीक्षण के दौरान कई बार अधिकारी स्वयं पहल करते हुए संस्थानों की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रहे हैं। शासकीय शालाओं में बेंच की व्यवस्था, आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों के लिए खिलौने, नई ड्रेस सहित अन्य आवश्यक सामग्री निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा स्वयं उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अतिरिक्त अधिकारी छात्रावासों एवं शासकीय शालाओं में पहुंचकर विद्यार्थियों के साथ समय व्यतीत करते हुए उन्हें उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास हेतु प्रेरक सुझाव साझा किए जा रहे हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास एवं लक्ष्य के प्रति जागरूकता बढ़े। जिन व्यवस्थाओं में विभागीय हस्तक्षेप आवश्यक होता है, उनके संबंध में संबंधित जिला अधिकारियों को सूचित कर नियमित अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है, ताकि समस्याओं का शीघ्र एवं स्थायी निराकरण सुनिश्चित किया जा सके। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष भी इसी प्रकार अधिकारियों द्वारा शासकीय शालाओं एवं छात्रावासों का सतत निरीक्षण किया गया था। वर्ष 2024- 2025 हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी परीक्षा परिणामों में अभूतपूर्व प्रदर्शन करते हुए जिले ने पूरे प्रदेश में विशेष उपलब्धि प्राप्त की थी। इस उपलब्धि में कही न कहीं अधिकारियों द्वारा शालाओं का निरीक्षण, विद्यार्थियों को शिक्षा एवं परीक्षाओं के लिए दिये गये मार्गदर्शन ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कलेक्टर नर्मदापुरम की अनुपम पहल 'मिशन परिवर्तन -100' से शासकीय संस्थाओं के निरीक्षण के लिए मिली प्रभावी व्यवस्था, शासकीय संस्थाओं में विभिन्न समस्याओं की समय पर जानकारी न मिलने के कारण उनके निराकरण में अनेक अवसरों पर विलंब हो जाता था। अधिकारियों तक सूचना के समय पर न पहुँच पाने तथा फाल्स रिपोर्टिंग जैसी चुनौतियाँ समस्याओं के चिन्हांकन, आकलन एवं समाधान में बाधक बन रही थीं। इस स्थिति को प्रभावी रूप से सुधारने हेतु कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना द्वारा एक अभिनव पहल 'मिशन परिवर्तन -100' प्रारंभ की गई, जिसके माध्यम से शासकीय संस्थाओं के निरीक्षण एवं प्रबंधन को सुगम एवं प्रभावी बनाया गया है। मिशन परिवर्तन -100 के अंतर्गत जिलेभर में 100 अधिकारियों की ड्यूटी निर्धारित की गई है, जिन्हें उनके कार्यक्षेत्र के आसपास स्थित शासकीय संस्थाओं के नियमित निरीक्षण की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

4700 शासकीय संस्थाओं के लिए अधिकारियों को बनाया गया 'परिवर्तनकर्ता'

जिले में शासकीय संस्थाओं की व्यवस्थाओं में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से वर्ष 2025-26 के लिए जिलेभर की 4700 शासकीय संस्थाओं को चिन्हित कर उनके नियमित निरीक्षण की जिम्मेदारी जिला एवं खंड स्तरीय अधिकारियों को सौंपी गई है। इस अभिनव पहल के तहत अधिकारियों को केवल निरीक्षणकर्ता नहीं बल्कि 'परिवर्तक' के रूप में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। अधिकारी चिन्हित संस्थाओं में जाकर शिक्षा की गुणवत्ता, स्वच्छता व्यवस्था, शासकीय कर्मचारियों की उपस्थिति, आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सहित विभिन्न बिंदुओं के आधार पर निरीक्षण कर रहे हैं तथा पाई गई अव्यवस्थाओं के सुधार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। ये समस्त अधिकारी ऐसे अनुभवी और वरिष्ठ अधिकारी हैं, जिन्हें प्रशासनिक कार्यों का गहरा अनुभव है। इस मिशन के अंतर्गत संस्था आवंटन की व्यवस्था सोच-समझकर की गई। प्रत्येक अधिकारी को यथासंभव समीपस्थ क्षेत्र, ग्राम में एक स्कूल, एक आंगनबाड़ी, एक छात्रावास और एक स्वास्थ्य संस्था आवंटित की गई। ताकि निरीक्षण किसी भी अधिकारी के लिए असहज न बने, बल्कि सहज और प्रभावी हो। यह सुनिश्चित किया गया कि प्रत्येक परिवर्तक अधिकारी अपनी आवंटित संस्थाओं में नियमित रूप से भ्रमण करे, स्वयं निरीक्षण करे, कमियों को चिन्हित करे और उनके समाधान की दिशा में कार्य करे।

कलेक्टर के निर्देशानुसार अधिकारियों द्वारा उपार्जन केंद्रों का नियमित निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का लिया जा रहा जायजा

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले में किसानों से समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन का कार्य निरंतर एवं सुचारू रूप से किया जा रहा है। जिले में स्थापित 70 धान उपार्जन केंद्रों के माध्यम से किसानों से समर्थन मूल्य पर धान की खरीदी की जा रही है। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार जिला एवं खंड स्तरीय अधिकारियों द्वारा उपार्जन केंद्रों की व्यवस्थाओं का नियमित निरीक्षण कर आवश्यक सुधार सुनिश्चित किए जा रहे हैं। अधिकारी भ्रमण के दौरान उपार्जन केंद्रों पर उपस्थित किसानों से संवाद कर उनकी समस्याओं की जानकारी ले रहे हैं तथा उनका निराकरण भी सुनिश्चित किया जा रहा है। इसी क्रम में नर्मदापुरम अनुविभाग अंतर्गत अधिकारियों द्वारा विभिन्न धान उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण किया गया। तहसीलदार नर्मदापुरम सरिता मालवीय द्वारा नर्मदांचल विपणन सहकारी संस्था एवं वृताकार सेवा समिति जासलपुर द्वारा संचालित धान उपार्जन केंद्र का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान किया तथा केंद्र पर बारदानों एवं हम्मालों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु समिति प्रबंधक को आवश्यक निर्देश दिए। इसी प्रकार नायब तहसीलदार स्वीटी चौहान द्वारा मीनेश वेयरहाउस एवं अर्पित वेयरहाउस (उपार्जन केंद्रों) का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति को बारदानों की मांग पूर्व नियोजित रूप से करने के निर्देश दिए गए।

संक्षिप्त समाचार

स्वास्थ्य विभाग द्वारा मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी

सीहोर (निप्र)। जिले के स्वास्थ्य विभाग द्वारा सीजनल एनफ्लूऐन्जा की रोकथाम, बचाव और नियंत्रण के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा आमजन से अपील की गई है कि मौसम में होने वाले बदलाव के कारण सर्दी-खाँसी (इन्फ्लूएंजा) के लक्षण दिखाई दे सकते हैं, इसलिए इस संक्रमण से बचाव के लिये व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक हैं। सीएमएचओ सुधीर डेहरिया ने बताया कि इन मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता, सामाजिक दूरी, मास्क पहनना आवश्यक है, ताकि संक्रमण न फैले। उन्होंने बताया कि संवेदनशील समूह जैसे छोटे बच्चे, वृद्धजन, गर्भवती महिलाएं, लंग्स इन्फेक्शन, डायबिटीज, हृदय रोग, क्रोनिक लीवर वाले मरीजों को विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। यदि बुखार, खांसी, तीव्र श्वसन जैसे लक्षण दिखाई दें, तो तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें। स्वास्थ्य विभाग ने अपील की है कि सभी आमजन स्वयं को इस बदलते मौसम में मौसमी संक्रमण से बचाव के लिये जागरूक रहें और सर्दी, खांसी, बुखार के लक्षण दिखाई देने पर तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क कर उपचार लें।

सचिव महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा किया गया वन स्टाप सेंटर नर्मदापुरम का निरीक्षण

नर्मदापुरम (निप्र)। महिला एवं बाल विकास विभाग की सचिव श्रीमती जी. व्ही. रश्मि द्वारा वन स्टाप सेंटर, नर्मदापुरम का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सचिव ने वन स्टाप सेंटर में उपस्थित पीड़ितो से संवाद किया तथा हितग्राहियों को प्रदान की जा रही सेवाओं के संबंध में परामर्श किया। सचिव द्वारा वन स्टाप सेंटर के स्टाफ से परिचय प्राप्त कर उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी ली गई। उन्होंने केंद्र में संचालित गतिविधियों की समीक्षा करते हुए पीड़ित महिलाओं को त्वरित सहायता, परामर्श एवं संरक्षण प्रदान किए जाने के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर संयुक्त संचालक नर्मदापुरम संभाग श्रीमती तृप्ति त्रिपाठी, सहायक संचालक श्री संजय जैन, परियोजना अधिकारी (ग्रामीण) श्री प्रमोद गौर, परियोजना अधिकारी (शहरी) श्रीमती प्रीति यादव, क्षेत्रीय समन्वयक श्री मनोज चौहान, बाल कल्याण समिति अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र कौरव एवं बाल कल्याण समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

मोहासा औद्योगिक क्षेत्र में अवैध खनन पर प्रशासन की प्रभावी कार्यवाही

खनिज एवं राजस्व विभाग द्वारा विभिन्न स्थानों पर संयुक्त जांच, कर किए गए वाहन जप्त एवं अर्थदण्ड अधिरोपित

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना से प्राप्त निर्देश के पालन में जिले में गौण खनिजों के अवैध उत्खनन / परिवहन/भण्डारण के विरुद्ध खनिज, राजस्व एवं पुलिस विभाग द्वारा संयुक्त रूप से सम्पूर्ण जिले में कार्यवाही जारी है। ग्राम मोहासा, तह0 -माखननगर औद्योगिक क्षेत्र जिला नर्मदापुरम, में संयुक्त रूप से राजस्व, खनिज एवं एम.पी.आई.डी.सी. विभाग द्वारा जांच की गई। जांच में यह पाया गया कि ग्राम मोहासा औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम-धमासा में एम.पी.आई.डी.सी. द्वारा फेस-01 प्लॉट नंबर-18 M/s Premier Energies Globle Environment Private Limited को आवंटित किया गया है। मौके पर उक्त क्षेत्र में खनिज मिट्टी का उत्खनन किया जाना पाया गया, जो कि लगभग 12319 घ0मी0 पाया गया। जिसकी विस्तृत जाँच कर नियमानुसार कार्यवाही की जा रही है। खनिज विभाग द्वारा नियमित रूप से गौण खनिजों के अवैध उत्खनन / परिवहन की जाँच कर निरंतर कार्यवाही की जाती है। मोहासा से 01 डम्पर क्रमांक RJ19GF9431 एवं 02 डम्पर क्रमशः RJ17GB9099 एवं RJ17GC9007 को खनिज मिट्टी के अवैध उत्खनन करते हुए पाये जाने पर जप्त कर वाहन मालिक / चालक के विरूद्ध गौण खनिज नियमों के तहत अवैध उत्खनन के प्रकरण दर्ज कर अधिरोपित अर्थदण्ड राशि 78000/- रूपये खनिज मद में जमा कराया गया है। समीपस्थ ग्रामों में स्थित तवा नदी से रेत का मोहासा औद्योगिक क्षेत्र हेतु परिवहन करने पर ग्राम-आँचलखेड़ा से विभिन्न दिवसों में 01 डम्पर, 05 ट्रेक्टर ट्राली को रेत खनिज का अवैध परिवहन करते हुए जप्त किये गये हैं। जिनके विरूद्ध प्रकरण पंजीबद्ध कर नियमानुसार कार्यवाही कर अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया है। उक्त कार्यवाही में अंकित मौर्य नायब तहसीलदार माखननगर, प्रभारी खनि निरीक्षक श्री कृष्णकांत सिंह परस्ते, आयुष सेन जे.ई. (सिविल) एम.पी.आई.डी.सी., निखिल पटेल हल्का पटवारी मोहासा, हेमन्त राज खनिज सिपाही एवं बल उपस्थित रहा।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने किया 73 करोड़ रूपये से अधिक के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन

गांव विकसित होंगे तो प्रधानमंत्री श्री मोदी का विकसित भारत का सपना भी होगा साकार : केंद्रीय कृषि मंत्री

सीहोर (निप्र)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी के सलकनपुर में आयोजित कार्यक्रम में पीएचई विभाग तथा पीडब्ल्यूडी विभाग के 73 करोड़ 01 लाख रूपये से अधिक के सड़क, पुलिया सहित अन्य विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इन कार्यों में पीडब्ल्यूडी विभाग के 70 करोड़ 01 लाख 17 हजार रूपये लागत के 11 विकास कार्य शामिल हैं और पीएचई विभाग के 02 करोड़ 99 लाख 89 हजार रूपये लागत का एक विकास कार्य शामिल हैं। इस अवसर उन्होंने कहा कि

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में देश एवं प्रदेश में निरंतर विकास के कार्य को रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज यहां 73 करोड़ रूपये से अधिक के विकास एवं निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया गया है, जिनमें से अधिकतर सड़क निर्माण कार्य हैं, सड़कें विकास का मुख्य आधार होती है। इन सड़कों के बन जाने से क्षेत्र निश्चित ही तेज गति से विकसित होगा। उन्होंने कहा कि हाल ही में मनरेगा योजना में बदलाव करते हुए 'विकसित भारत जी राम जी योजना' बनाई गई है, इसमें एक साल में 100 दिनों की जगह पर 125 दिन का रोजगार देने की गारंटी दी गई है। इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि इस योजना के तहत गांवों में विकास के कार्य हों। उन्होंने कहा कि इस योजना के लिए 01 लाख 51 हजार 282 करोड़ रूपये का बजट प्रस्तावित है। इसके साथ ही इसमें एक और विशेष प्रावधान किया गया है, प्रशासनिक व्यय 6% से बढ़ाकर 9% कर दिया गया है, ताकि रोजगार भी अधिक मिले और ग्रामों में विकास के कार्य भी अधिक हों। उन्होंने कहा कि यदि गांव विकसित होंगे तो प्रधानमंत्री श्री मोदी का विकसित भारत का सपना भी पूर्ण होगा। इस योजना में यह प्रावधान किया गया है कि गांव के विकास के लिए गांव के लोग रणनीति बनाएं और उसे धरातल पर क्रियान्वित करने का कार्य करें। इसके साथ ही काम की आवश्यकतानुसार पंचायतों की ग्रेडिंग भी की जाएगी।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने थाना गंजबासौदा एवं थाना सिरोंज में दर्ज एक-एक प्रकरण के फरार आरोपियों की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए तीन-तीन हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है।

शासकीय खण्ड स्तरीय कन्या छात्रावास का किया निरीक्षण

विदिशा (निप्र)। कुरवाई के अनुविभागीय राजस्व अधिकारी (एसडीएम) श्री मनीष जैन ने आज शासकीय खण्ड स्तरीय कन्या छात्रावास, कुरवाई का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने छात्रावास की व्यवस्थाओं, छात्राओं को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं एवं प्रशासनिक प्रबंधन की गहन समीक्षा की। एसडीएम श्री जैन ने छात्रावास परिसर की साफ-सफाई, कक्षों की स्थिति, पेयजल, विद्युत व्यवस्था, शौचालय, रसोईघर तथा भोजन की गुणवत्ता का निरीक्षण किया। उन्होंने छात्राओं से संवाद कर उनकी शैक्षणिक, आवासीय एवं अन्य समस्याओं की जानकारी ली और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक सुधार हेतु निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने छात्रावास में अनुशासन, सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाए रखने पर विशेष जोर दिया। साथ ही छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए अध्ययन का अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने, समय पर भोजन, नियमित स्वास्थ्य परीक्षण एवं आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। एसडीएम श्री मनीष जैन ने कहा कि छात्रावास में निवासरत छात्राओं को शासन की मंशानुरूप सभी सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रशासन की प्राथमिकता है। किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। निरीक्षण के दौरान संबंधित विभागीय अधिकारी एवं छात्रावास का स्टाफ उपस्थित रहा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत स्वर्णिम और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की दिशा में गतिशील : केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके

बैतूल (निप्र)। जनजातीय कलाकारों के हस्तशिल्प, हथकरघा एवं प्राकृतिक उत्पादों को व्यावसायिक प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से जनजाति मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम, बैतूल में आदि बाजार का आयोजन किया गया। इस आयोजन का शुभारंभ केंद्रीय राज्य मंत्री, जनजातीय कार्य श्री दुर्गादास उईके तथा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक बैतूल श्री हेमंत खंडेलवाल द्वारा किया गया। शुभारंभ अवसर पर विधायक श्री महेंद्र सिंह चौहान, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर, जिला विकास सलाहकार समिति के सदस्य श्री सुधाकर पवार, क्षेत्रीय प्रबंधक ञत्रद्धस्नश्चष्ठ श्रीमती प्रीति मैथिल, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई भास्कर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री हंसराज धुर्वे, श्री महेश राठौर, कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, श्रीमती ममता उईके, श्रीमती रोशनी इवने, आनंद प्रजापति, श्री सुनील भलावी सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विवेक पांडे सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कृष्णा हजारे ने किया। केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य श्री दुर्गादास उईके ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत स्वर्णिम और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की दिशा में निरंतर गतिशील है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार का जनजातीय कार्य विभाग जनजातीय वर्ग के शिक्षा , स्वास्थ्य के साथ-साथ जनजातीय कला, संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए लगातार कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास हो रहा है और जनजातीय वर्ग देश के हर क्षेत्र में सशक्त रूप से प्रतिनिधित्व कर रहा है। केंद्रीय मंत्री श्री उईके ने कहा कि हमारे पारंपरिक उत्पाद ज्वार, बाजरा, रागी और मक्का को 'श्रीअन्न 'का नाम देकर प्रधानमंत्री जी ने इन्हें सम्मान प्रदान किया है। आज यही श्रीअन्न देश के 5-स्टार और 7-स्टार होटलों में सबसे महंगे और पसंदीदा खाद्य पदार्थों में शामिल हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि आदि बाजार में जनजातीय कलाकारों द्वारा भित्ति चित्रों से लेकर अपनी ज्ञान-कला और पारंपरिक शिल्प का अद्भुत प्रदर्शन किया गया है।

छतरपुर में प्रेमिका की हत्या का आरोपी दो साल बाद गिरफ्तार

छतरपुर। दो साल पहले अपनी प्रेमिका की गला रेतकर हत्या करने के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पर 20 हजार रुपये का इनाम घोषित था और वह लंबे समय से पुलिस से बचकर फरार चल रहा था।

नवंबर 2023 में की थी प्रेमिका की हत्या- पुलिस अधीक्षक अगम जैन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि आरोपी गोपाल उर्फ कल्लू रैकवार ने नवंबर 2023 में कोतवाली थाना क्षेत्र में अपनी प्रेमिका की निर्मम हत्या की थी। हत्या के बाद से वह फरार था और अपनी पहचान छिपाकर विभिन्न स्थानों पर रह रहा था।

मथुरा और बागेश्वरधाम में छिपकर रह रहा था आरोपी- पुलिस के अनुसार, आरोपी मथुरा और बागेश्वरधाम जैसे धार्मिक स्थलों पर रहकर खुद को छिपाने की कोशिश कर रहा था। वह वहां अलग पहचान के साथ रह रहा था ताकि पुलिस की पकड़ में न आ सके, लेकिन सूचना तंत्र के सक्रिय होने से उसकी लोकेशन का पता लगा और उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

पहले भी हत्या के मामले में सजा काट चुका है- एसपी अगम जैन ने बताया कि आरोपी का आपराधिक रिकॉर्ड पहले से ही गंभीर रहा है। वर्ष 2012 में भी वह एक हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट चुका है। वर्ष 2023 में जब उसने अपनी प्रेमिका की हत्या की, उस समय वह जमानत पर जेल से बाहर था।

विशेष टीम ने की कार्रवाई, पूछताछ जारी- आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में कोतवाली थाना पुलिस की एक विशेष टीम गठित की गई थी। लगातार प्रयास और मिली सूचनाओं के आधार पर टीम ने उसे दबोच लिया। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है और पुलिस आगे की कानूनी कार्रवाई में जुटी हुई है।

सीएमएचओ ने बागरातवा, धांई, काकड़ी एवं चूरना स्वास्थ्य संस्थाओं का किया निरीक्षण

नर्मदापुरम (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नरसिंह गेहलोत द्वारा शनिवार को माखननगर विकासखंड के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बागरातवा, उप स्वास्थ्य केंद्र धांई एवं काकड़ी तथा ग्राम चूरना में निर्माणाधीन स्वास्थ्य भवन का सघन निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सीएमएचओ ने पीएचसी बागरातवा में संस्थागत प्रसव की संख्या बढ़ाने के लिए स्टाफ एवं आशा कार्यकर्ताओं को निर्देशित किया। उन्होंने बागरातवा एवं आसपास के क्षेत्रों की गर्भवती महिलाओं को इसी स्वास्थ्य केंद्र पर प्रसव कराने हेतु प्रेरित करने के निर्देश दिए।

धांई एवं काकड़ी उप स्वास्थ्य केंद्रों में आयोजित ग्राम स्वास्थ्य एवं पोषण दिवस का अवलोकन करते हुए एएनएम, सीएचओ एवं आशा कार्यकर्ताओं से हितग्राहियों को प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी ली गई। इस दौरान एक गर्भवती महिला से संवाद कर उनकी जांच, टीकाकरण एवं अन्य सेवाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। स्वास्थ्य संस्थाओं के निरीक्षण उपरांत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माखननगर में मेडिकल ऑफिसर, बीईई, सुपरवाइजर एवं अन्य मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक में सीएमएचओ ने निर्देश दिए कि जननी सुरक्षा योजना अंतर्गत जिन गर्भवती महिलाओं के भुगतान में समग्र आईडी अपडेट या विवाह प्रमाण पत्र के कारण समस्या आ रही है, उनके निराकरण हेतु जनपद पंचायत सीईओ एवं ग्राम रोजगार सहायकों से समन्वय कर समय-सीमा में कार्य पूर्ण कराया जाए, ताकि हितग्राहियों को समय पर भुगतान हो सके। सीएमएचओ ने सभी अधिकारी-कर्मचारियों को सार्थक ऐप पर कर्तव्य स्थल से नियमित लॉग-इन एवं लॉग-आउट करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्देशों का उल्लंघन करने पर संबंधित का वेतन आहरण नहीं किया जाएगा। सभी सीएचओ एवं एएनएम को निर्देशित किया गया कि गर्भवती महिला का पंजीयन के समय से ही आवश्यक जांच एवं परीक्षण सुनिश्चित किया जाए तथा आयरन सुक्रोज की प्रविष्टि अनमोल ऐप में अनिवार्य रूप से की जाए।

पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष पेंटावेलेंट वैक्सीन के प्रथम डोज में आई कमी को दूर करने हेतु बीईई को आवश्यक कार्ययोजना बनाकर लक्ष्य पूर्ति के निर्देश दिए गए। सभी सुपरवाइजरों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि तथा सभी ऑनलाइन पोर्टल्स पर शत-प्रतिशत प्रविष्टि सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। इस अवसर पर एएसओ श्री ओ.पी. तुमराम, बीईई श्री भीमसिंह यादव, लेखापाल श्री प्रवीण पटेल सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीएम यादव ने की घोषणा

मुलताई का नाम अब 'मूलतापी' होगा

मुलताई (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बैतूल प्रवास के दौरान मुलताई नगर का नाम बदलकर 'मूलतापी' करने की घोषणा की। यह ऐलान उन्होंने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा की मौजूदगी में एक मेडिकल कॉलेज के भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान किया।

मुख्यमंत्री ने बताया कि इस संबंध में मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख द्वारा प्रस्ताव भेजा गया है, जिसे राज्य सरकार आगे बढ़ाएगी। उन्होंने बैतूल में आदिवासी संग्रहालय बनाने का भी ऐलान किया।

सीएम की घोषणा के बाद मुलताई नगर में उत्साह का माहौल है। नगरवासी लंबे समय से इसके ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए नाम परिवर्तन की मांग कर रहे थे। नागरिकों, सामाजिक संगठनों और धर्माचार्यों ने इस फैसले का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताया है।

नगर के विद्वान पंडित सौरभ जोशी ने बताया कि प्राचीन काल में मुलताई का नाम 'मूलतापी' था, जिसका अर्थ है ताप्ती नदी का मूल स्थान। देश की प्रमुख नदियों में शामिल ताप्ती नदी का उद्गम स्थल मुलताई ही है, जिससे यह नगर धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।

स्थानीय लोगों का मानना है कि 'मूलतापी' नाम से नगर की ऐतिहासिक पहचान को मजबूती मिलेगी। ताप्ती माता के दर्शन और पूजन के लिए हर वर्ष हजारों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। नाम परिवर्तन से धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

यूनियन कार्बाइड की राख पर कोर्ट का बड़ा फैसला

पुराने आदेश पर लगाई रोक दो माह का दिया टाइम

जबलपुर (नप्र)। यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे के निष्पादन से निकली राख की लैंडफिलिंग पर लगी रोक को हाईकोर्ट ने अस्थाई रूप से वापस ले लिया है। लैंडफिलिंग पर लगाई गई रोक के आदेश पर समीक्षा करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी। जस्टिस विवेक कुमार सिंह और जस्टिस अजय कुमार निरंकारी की युगलपीठ ने आवेदन की सुनवाई करते हुए आदेश अस्थाई तौर पर वापस लेते हुए सरकार को पूर्व में पारित आदेश के अनुसार कार्यवाही करने के निर्देश जारी किये हैं।

2004 में लगाई गई थी याचिका- दरअसल, साल 2004 में आलोक प्रताप सिंह ने यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे के विनिष्टीकरण की मांग करते हुए जनहित याचिका दायर की थी। याचिकाकर्ता की मृत्यु के बाद हाईकोर्ट मामले की सुनवाई संज्ञान याचिका के रूप में कर रही है। पूर्व में हुई सुनवाई के दौरान सरकार की तरफ से हाईकोर्ट के बताया गया था कि जहरीले कचरे का विनष्टीकरण सफलतापूर्वक पीथमपुर स्थित सुविधा केंद्र में कर दिया गया है। जहरीले कचरे से लगभग 900 मीट्रिक टन राख व अवशेष एकत्रित हुआ है।

हाईकोर्ट में दायर की गई एक अन्य याचिका में कहा गया था कि यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे की राख में रेडियो एक्टिव पदार्थ सक्रिय हैं, जो चिंता का विषय है। राख में मर्करी है, जिसे नष्ट करने की तकनीक सिर्फ जापान व जर्मनी के पास है। हाईकोर्ट ने उक्त याचिका की सुनवाई मुख्य याचिका के साथ किये जाने के आदेश जारी किये गये थे।

8 अक्टूबर को क्या था आदेश- याचिका की सुनवाई करते हुए युगलपीठ ने 8 अक्टूबर 2025 को जारी अपने आदेश में कहा था कि आदेश के बावजूद भी जहरीले कचरे की राख की लैंडफिलिंग के लिए सरकार के द्वारा दूसरे स्थान के संबंध में जानकारी नहीं दी गई। सरकार के द्वारा इंसानों की आबादी से सिर्फ 500 मीटर दूर लैंड फिलिंग का स्थान निर्धारित किया गया है। कचरा अभी भी जहरीला है। भूकंप जैसी किसी प्राकृतिक आपदा के कारण उसे रोकने वाला स्ट्रक्चर ही टूट जाए या गिर जाए, तो एक और आपदा होगी।

कोर्ट ने कहा था कि जहरीली राख को ऐसी जगहों पर ले जाने की संभावना पर विचार करना चाहिये जो इंसानी बस्तियों, पेड़-पौधों और पानी के सोर्स से बहुत दूर हों। हम बात से संतुष्ट नहीं है कि प्रस्तावित कंटेनमेंट स्ट्रक्चर किसी भी तरह की अचानक जियो-टेक्टोनिक एक्टिविटी से होने वाले नुकसान से पूरी तरह सुरक्षित है।

युगलपीठ ने आवेदन की सुनवाई करते हुए अपने आदेश में कहा है कि पूर्व में पारित आदेश अध्ययन तथा तथ्यात्मक पहलुओं पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि 8 अक्टूबर 2025 के आदेश को अस्थाई रूप से स्थगित रखा जाये।

कोर्ट ने कहा था टेंडर निकाला जाए

युगलपीठ ने राज्य सरकार को निर्देशित किया था कि जहरीली कचरे के जहरीले कचरे की राख की लैंडफिलिंग की सबसे अच्छी टेक्निकल एक्सपर्टीज़ पाने के लिए ग्लोबल टेंडर निकाला जाये। जिनके पास इस तरह का काम करने और ज़हरीले केमिकल कचरे को कंटेन करने के अनुभव हो,इस संबंध में जानकारी प्रस्तुत करें। इसके अलावा लैंडफिलिंग के लिए दूसरा स्थान का चयन करें।

हाईकोर्ट ने की थी तल्ख टिप्पणी

युगलपीठ ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा था कि भोपाल में फैक्ट्री तब तक सुरक्षित थी, जब तक कोई मुसीबत नहीं आई और लगभग बीस हज़ार लोगों की जान एक पल में चली गई। बारिश में नई सड़कें बह जाती हैं और पुल गिर जाते हैं और इससे भी बुरा जब रेलवे ओवरब्रिज राइट-एंगल मोड़ के साथ बनाए जाते हैं। जिससे यह राज्य पूरे देश में मजाक का पात्र बन जाता है। तो राज्य की इंजीनियरिंग की काबिलियत पर पूरा भरोसा करना तबाही को न्योता देना हो सकता है। न्यायालय को ज़हरीली राख के लैंडफिलिंग की मौजूदा जगह इंसानों की आबादी के पास मंजूर नहीं है।

सागर पहुंचा दुनिया का सबसे बड़ा 210 टन वजनी शिवलिंग

3 करोड़ लागत से बना, 100 टायरों वाले ट्रक पर 1 महीने में 1593 किमी दूरी तय की

सागर (नप्र)। दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग सोमवार सागर जिले की सीमा में पहुंचा। सिवनी से होते हुए नेशनल हाईवे-44 के रास्ते जैसे ही यह विशालकाय शिवलिंग महाराजपुर और देवरी पहुंचा, भक्तों की भीड़ दर्शन के लिए उमड़ पड़ी। देर रात यह काफिला कंटनी मंदिर के पास रुका। इस शिवलिंग को तमिलनाडु के महाबलीपुरम से बिहार के चंपारण ले जाया जा रहा है। 210 टन वजनी इस शिवलिंग को देखने के लिए हाईवे पर लोगों का तांता लगा रहा।

इस महाकाय शिवलिंग के परिवहन के लिए करीब 100 चक्का वाले विशेष ट्रक का उपयोग किया जा रहा है। शिवलिंग का वजन इतना ज्यादा है कि ट्रक महज 5 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रहा है। यह यात्रा 21 नवंबर को महाबलीपुरम से शुरू हुई थी। एक महीने में महाबलीपुरम से 1593 किमी की दूरी तय कर काफिला सागर पहुंचा है। बिहार पहुंचने में अभी करीब 20 दिन और लगेंगे।

10 साल की मेहनत, 3 करोड़ रुपए खर्च- दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग बनाने में कारीगरों को 10 साल का समय लगा है और इस पर करीब 3 करोड़ रुपए का खर्चा आया है। इसके निर्माण के लिए सबसे पहले 250 मैट्रिक टन वजन का ग्रेनाइट का बड़ा पत्थर चुना गया। कारीगरों ने ग्राइंडर और ब्लेड की मदद से पत्थर को आकार दिया और छोटे औजारों से आकृतियां उकेरीं। लगातार घिसाई करके शिवलिंग को चिकना और चमकदार बनाया गया। अब इसका वजन 210 टन है।

ड्राइवर बोला- पुल पर लगता है डर- चालक दल के आलोक सिंह ने बताया कि शिवलिंग की ऊंचाई और गोलाई दोनों 33-33 फीट है। इसे ले जाना सौभाग्य की बात है, लेकिन यह चुनौती भरा काम है। 2 लाख 10 हजार किलो वजन होने के कारण रास्ते में पड़ने वाले पुल-पुलिया पर डर बना रहता है। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु से सुरक्षित सागर आ गए हैं, आगे भी भोलेनाथ ही मंदिर तक पहुंचाएंगे।

इस शिवलिंग को बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के जानकीनगर में निर्माणाधीन विराट रामायण मंदिर में स्थापित किया जाएगा। यह मंदिर 3 मंजिल का होगा और इसके मुख्य शिखर की ऊंचाई 270 फीट रहेगी।

कड़ाके की ठंड के साथ घने कोहरे का असर

दर्जनभर से ज्यादा ट्रेनें प्रभावित, मालवा एक्सप्रेस 4 घंटे लेट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में कड़ाके की ठंड के साथ घने कोहरे का असर लगातार बढ़ता जा रहा है। मंगलवार सुबह रीवा और सतना में तो अंधेरा जैसा नजर आ रहा था। यहां कोहरा इतना घना था कि 50 मीटर के बाद कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। इसका सीधा असर रेल यातायात पर पड़ा और एक दर्जन से ज्यादा ट्रेनें देरी से चल रही हैं।

कोहरे की वजह से मालवा एक्सप्रेस करीब 4 घंटे देरी से चली, जबकि शताब्दी, सचखंड, पंजाब मेल और झेलम एक्सप्रेस जैसी प्रमुख ट्रेनों पर भी असर देखा गया।

रीवा और सतना के अलावा दमोह, खजुराहो, नौगांव, ग्वालियर, मुरैना और सीधी में भी सुबह घना कोहरा छाया रहा।

इन जिलों में विजिबिलिटी 50 मीटर से 1 किलोमीटर के बीच दर्ज की गई।

वहीं भोपाल, दतिया, इंदौर, राजगढ़, उज्जैन, जबलपुर, मंडला, गुना, रायसेन, शिवपुरी, सागर, शाजापुर, भिंड और धार में भी कोहरे का असर देखा गया।

भोपाल, इंदौर और महेश्वर 'क्रिएटिव सिटी' बनेंगे

400 होम स्टे से ग्रामीणों ने कमाए 7 करोड़, 14 करोड़ टूरिस्ट प्रदेश में आए

भोपाल (नप्र)। भोपाल, इंदौर और महेश्वर मध्यप्रदेश की 'क्रिएटिव सिटी' बनेंगे। पिछले साल प्रदेश में 14 करोड़ टूरिस्ट आ चुके हैं। इनमें विदेशी भी शामिल हैं। वहीं, 400 होम स्टे संचालित किए जा रहे हैं। इनके जरिए ग्रामीण 7 करोड़ रुपए कमा चुके हैं। यह बात पर्यटन और संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहीं। उन्होंने कहा कि पर्यटन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए विभाग को पिछले 2 वर्ष में 18 से अधिक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। प्रदेश में 900 करोड़ रुपए से 20 सांस्कृतिक और धार्मिक लोकों का निर्माण हो रहा है। वैश्विक पटल पर 10 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों और भोपाल, इंदौर एवं महेश्वर को 'क्रिएटिव सिटी' के रूप में विकसित करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है।

मंत्री लोधी मंगलवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में विकास और सेवा के 2 वर्ष पर केंद्रित पत्रकार वार्ता को संबोधित किया।

1 हजार होम स्टे बनाएगी सरकार- मंत्री लोधी ने कहा, सरकार का लक्ष्य 1 हजार होम स्टे निर्माण करने का है। पर्यटन के क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देने के लिए रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव और मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट जैसे बड़े आयोजन किए गए हैं। आयोजनों के माध्यम से लगभग 10 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

मंत्री लोधी मंगलवार को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में विकास और सेवा के 2 वर्ष पर केंद्रित पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक डॉ. अभय अरविंद बेडेकर, संस्कृति विभाग के संचालक एनपी नामदेव भी मौजूद थे।

ओंकारेश्वर को अद्वैत लोक के रूप में विकसित कर रहे- मंत्री लोधी ने कहा, ओंकारेश्वर को अद्वैत लोक के रूप में विकसित किया जा रहा है। जिसके प्रथम चरण में आदि शंकराचार्य की 108 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित की जा चुकी है और द्वितीय चरण में अद्वैत लोक के निर्माण के लिए 2424 करोड़ रुपए से अधिक की राशि स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है।

साहित्यिक गजेटियर तैयार किए

मंत्री लोधी ने बताया कि सरकार द्वारा प्रदेश के सभी जिलों के साहित्यिक गजेटियर तैयार किए जा रहे हैं। विगत 2 वर्ष में 15 जिलों के साहित्यिक गजेटियर तैयार किए जा चुके हैं। वहीं, उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर, सागर, पन्ना, जबलपुर, महेश्वर जैसे अनेक स्थानों पर विशिष्टता को सम्मिलित करते हुए पूरे प्रदेश में संग्रहालयों की एक नवीन श्रृंखला का निर्माण किया जा रहा है। संस्कृति के क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने 8 विश्व कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विगत 2 वर्ष में मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत लगभग 25 हजार तीर्थ यात्रियों को लाभान्वित किया गया है। इसके साथ ही विगत 2 वर्ष में 132 शासन संधारित मंदिरों का जीर्णोद्धार भी किया गया है। आने वाले समय में हमारा लक्ष्य प्रदेश की जीडीपी में पर्यटन का योगदान बढ़ाकर 10 प्रतिशत करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 500 नए होटलों के माध्यम से 20 हजार कक्षों और 500 मार्ग सुविधा केंद्रों का निर्माण किया जाएगा। समावेशी विकास एवं सेफ टूरिज्म के लिए 50 हजार महिलाओं और बालिकाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा।

बैरसिया में स्कूल बस और कार के बीच टक्कर

कार सवार दंपती व बेटा घायल, बस खेत में उतरी, बच्चों में मची चीख-पुकार

भोपाल (नप्र)। बैरसिया इलाके में सोमवार सुबह एक निजी स्कूल की बस और कार की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसे में कार सवार दंपती और उनका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि बस में सवार सभी बच्चे सुरक्षित रहे। टक्कर इतनी तेज थी कि बस और कार दोनों सड़क से उतरकर खेत में जा गिरीं। हादसे के बाद बस में सवार बच्चों में चीख-पुकार मच गई। हालांकि बच्चों को किसी प्रकार की कोई चोट नहीं आई।

थाना प्रभारी वीरेंद्र कुमार सेन ने बताया कि दा फर्स्ट स्टेप स्कूल की बस दोपहर करीब 12:20 बजे सुबह बच्चों को लेकर स्कूल जा रही थी। इसी दौरान सामने से आ रही कार से उसकी टक्कर हो गई। दुर्घटना में कार सवार जसवंत, उनकी पत्नी फूल बाई और बेटा अभिषेक गंभीर रूप से घायल हो गए।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। फिलहाल तीनों की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक जांच में लापरवाही के संकेत मिलने पर बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया जाएगा। दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है।

सीहोर में बस नहर की पुलिया से टकराई, 22 घायल

दो भोपाल रेफर, बाइक सवार नीचे दबा हरदा से भोपाल जा रही थी बस

सीहोर (नप्र)। सीहोर जिले के सलकनपुर के पास मंगलवार सुबह एक बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बस हरदा-सिवनी से सलकनपुर होते हुए भोपाल आ रही थी। आंवलीघाट रोड पर सलकनपुर के समीप एक बाइक सवार को बचाने के प्रयास में बस अनियंत्रित होकर नहर की पुलिया की स्पील पर चढ़ गई। बस चौहान सर्विस की बताई जा रही है। हादसे में बस में सवार कई यात्रियों को सिर, हाथ, पैर और मुंह में गंभीर चोटें आई हैं। वहीं बाइक सवार बस के नीचे दब गया, जिसकी हालत गंभीर है। एक अन्य यात्री के भी गंभीर रूप से घायल होने की जानकारी है। एसडीओपी रवि शर्मा ने बताया कि लगभग 45 यात्री बस में सवार थे। घटना के बाद कुछ यात्री अन्य साधनों से अस्पताल पहुचे हैं, लगभग 22 लोग घायल हुए है, जिनमें से दो गंभीर होने से हमीदिया अस्पताल रेफर किए जा रहे है।

एम्बुलेंस नहीं पहुंची, पुलिस ने पहुंचाया अस्पताल- हादसा सुबह करीब 10:30 बजे हुआ। सूचना मिलते ही सलकनपुर चौकी पुलिस मौके पर पहुंची। 108 एम्बुलेंस और अन्य एम्बुलेंस वाहन समय पर घटनास्थल नहीं पहुंच सके। इसके बाद पुलिस प्रशासन ने तत्परता दिखाते हुए अपने वाहनों से घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रेहटी पहुंचाया, जहां उनका प्राथमिक उपचार किया गया।

'सिलसिला अदब' ने साहित्यिक यादों को ताज़ा कर दिया : उमेश त्रिवेदी

'नया नज़रिया' व 'महमूद ज़की वेलफेयर फाउंडेशन' का आयोजन

भोपाल। 'सिलसिला अदब' जैसे आयोजनों का चलन कम हो गया है, नया नज़रिया इस बात के लिए बधाई का पात्र है कि उसने पुरानी परंपरा को मजबूती के साथ आगे बढ़ाने का काम किया है। ऐसी साहित्यिक परंपराएं हमारी साझी विरासत को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाती हैं। ये विचार जाने-माने पत्रकार और कार्यक्रम अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी ने नया नज़रिया और महमूद ज़की वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त बैनर तले आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उमेश त्रिवेदी ने कहा कि नया नज़रिया ने जिस तरह सिलसिला अदब के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पुनर्जीवित किया है, वह सराहनीय है। यहां आकर मेरी 50 साल पुरानी साहित्यिक यादें ताज़ा हो गई हैं। प्रोग्राम के मेहमान खास सीनियर जर्नलिस्ट और शायर इनामुल्लाह खान लोधी ने अपने कहा कि मैंने महमूद ज़की साहब के साथ मुशायरा पढ़ा है और मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि महमूद ज़की की तरबियत रंग ला रही है। उनके बेटे डॉ. मज़हर महमूद, डॉ. ज़फ़र महमूद, डॉ. इशरत नाहिद और डॉ. नज़र महमूद भाषा और साहित्य के रक्षक के तौर पर अपना फ़र्ज़ निभा रहे हैं। नया नज़रिया और महमूद ज़की वेलफ़ेयर फ़ाउंडेशन के बैनर तले साहित्य सीरीज़ का लगातार आयोजन इस बात का सबूत है कि नई पीढ़ी अपनी भाषा और संस्कृति को लेकर कितनी फिक्रमंद है। जिस भाषा और संस्कृति के रक्षक ऐसे दिग्गज हों, वह कभी खत्म नहीं हो सकती।

इससे पहले, डॉ. मेहताब आलम ने प्रोग्राम के मकसद और उद्देश्यों पर रोशनी डालते हुए कहा कि डॉ. नज़र महमूद के पिता महमूद ज़की ने शायरी, पत्रकारिता और आलोचना के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाई। डॉ. नजर महमूद को पत्रकारिता अपने पूज्य पिता से पत्रकारिता विरासत में मिली है। डॉ. नज़र महमूद ने दिल्ली में दो केंद्रीय मंत्रियों के मीडिया सलाहकार के तौर पर काम किया उसके बाद उन्होंने उर्दू में नया नज़रिया शुरू किया, यह मध्य प्रदेश का पहला उर्दू अख़बार है जो एक साथ पाँच जगहों से छपता है। इसके बाद रोज़नामा नया नज़रिया के एडिटर और पब्लिशर डॉ. नज़र महमूद ने मेहमानों का स्वागत तोहफ़े देकर किया। प्रोग्राम के अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी का स्वागत पंकज पाठक ने, मुख्य अतिथि इनामुल्लाह खान लोधी का ज़फ़र सेहबाई ने, अयाज़ कमर का सैयद नुसरत अली ने, सीनियर जर्नलिस्ट अजय बोकिल का इकबाल मसूद ने, राजेश चंचल का डॉ. एहसान आज़मी ने, शाहिद कामिल का प्रकाश गांधी ने, और लघु कथा लेखक खान आशु का स्वागत डॉ. नज़र महमूद और डॉ. मेहताब आलम ने किया। 'सिलसिला अदब' प्रोग्राम में जर्नलिज़्म, पोएट्री और लिटरेचर से गहरा नाता रखने वाले उर्दू और हिंदी के जाने-माने जर्नलिस्ट शामिल हुए। शुरुआत में सीनियर जर्नलिस्ट शाहिद कामिल ने अपने शायरी से महफ़िल की शान बढ़ाई। उनके बाद सीनियर जर्नलिस्ट राजेश चंचल ने अपनी गज़लें और कविता पेश की और महफ़िल से तारीफ़ें बटोरीं। खान आशु ने अपनी लघु कथा से महफ़िल को कामयाब बनाया। सीनियर जर्नलिस्ट अजय बोकिल ने मां पर कविताएं पेश करके लोगों का ध्यान खींचा, जबकि सीनियर जर्नलिस्ट अयाज़ कमर ने अपनी अलग-अलग कविताओं के साथ ग़ज़लें भी पेश कीं, जिन्हें मौजूद लोगों ने खूब पसंद किया। प्रोग्राम के मुख्य अतिथि इनामुल्लाह खान लोधी और अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी ने भी अपनी ग़ज़लों और कविताओं से महफिल की शान में इज़ाफ़ा किया।

कार्यक्रम के अंत में दैनिक 'नया नज़रिया' के संपादक और प्रकाशक डॉ नज़र महमूद ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'सिलसिला ए अदब' के तहत हर महीने एक काव्य गोष्ठी आयोजित होती है। इस बार हमने पत्रकारों को शामिल करके एक अनूठी गोष्ठी आयोजित करने का फैसला लिया था जो कामयाब रहा।